

“सच्ची सफलता वही है, जिसमें हमारी मेहनत के साथ किसी और के जीवन में भी उम्मीद, सुरक्षा और मुस्कान जुड़ जाए।”

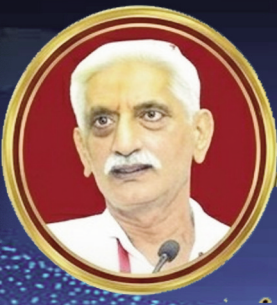
परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गुंजेगी पूरी दुनिया में परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर में "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

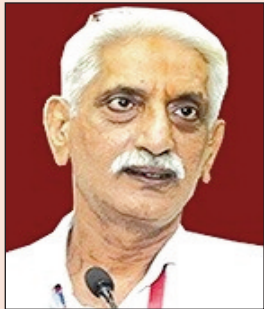


संजय बाठला मुख्य संपादक

एक्सक्लूसिव रिपोर्ट - दिल्ली में न्यायिक अधिकार पर संकट

ट्रैफिक चालान अब जज नहीं, SDM-तहसीलदार-फूड ऑफिसर तय करेंगे? दिल्ली के सभी जिला कोर्ट के वकीलों ने 21 सितंबर को 'काम से दूर रहने' का ऐलान, कहा - यह नागरिक के न्याय पाने के अधिकार पर हमला

केंद्र के बदले हुए मोटर व्हीकल रूल 167 के खिलाफ दिल्ली बार का हल्ला-बोल: 45 दिन में विरोध नहीं तो चालान मान्य, विरोध खारिज हो तो कोर्ट जाने के लिए 50% जुर्माना पहले जमा करो - वकीलों ने कहा, गरीब न्याय कैसे लेगा?

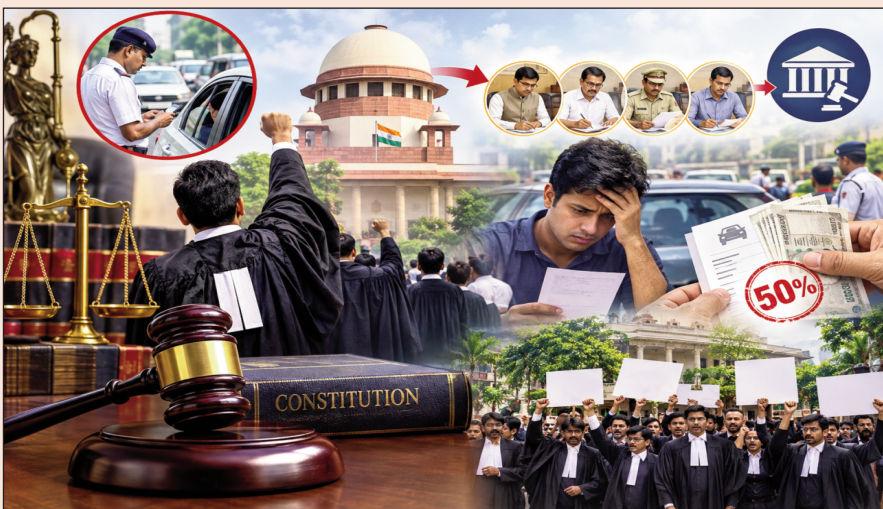


लेख संजय कुमार बाठला मुख्य संपादक परिवहन विशेष

आपका अगला चालान कोर्ट नहीं, कचहरी के बाबू तय करेंगे? अगर आपका ट्रैफिक चालान गलत कटा है, तो अब तक आप ट्रैफिक कोर्ट में ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट के सामने उसे चुनौती दे सकते थे। अब सिस्टम बदल रहा है। सेंट्रल मोटर व्हीकल रूल 167 के तहत दिल्ली सरकार ने SDM, एजीक्यूटिव मजिस्ट्रेट, फूड एंड सप्लाई ऑफिसर, तहसीलदार और डिस्ट्रिक्ट ट्रांसपोर्ट ऑफिसर को विवादित चालान का फैसला करने के लिए आर्थोरीति नियुक्त कर दिया है।

इसी के विरोध में दिल्ली के सभी डिस्ट्रिक्ट कोर्ट बार एसोसिएशन की कोऑर्डिनेशन कमिटी ने 19.09.2026 को इमरजेंसी मीटिंग कर 21 सितंबर 2026 (सोमवार) को एक दिन के सांकेतिक 'काम से दूर रहने' (Abstainence from Work) और सुबह 11:30 बजे सभी कोर्ट परिसरों के बाहर शांतिपूर्ण प्रदर्शन का ऐलान किया है।

संकुल पर हस्ताक्षर - नरवीर



डबास, सेक्रेटरी जनरल, कोऑर्डिनेशन कमिटी।

मुख्य बिंदुवार - संकुलर में क्या है? 5 बड़े तथ्य बिंदु 1: नया नियम 167 (5), (6) और (9) क्या कहता है? जो जनता को सीधे प्रभावित करेगा

1. 45 दिन का अल्टीमेटम: चालान कटने की तारीख से 45 दिन के अंदर आपको सरकारी पोर्टल पर दस्तावेजी सबूत के साथ विरोध दर्ज करना होगा। नहीं किया तो - रूल 167 (6) के तहत चालान अपने आप स्वीकार माना जाएगा। यानी चुप रहे तो दोषी।

2. 50% प्री-डिपॉजिट की तलवार: अगर आपकी अर्जी SDM/डिपार्टमेंटल आर्थोरीटि खारिज कर दे, तो आपको ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट या सक्षम कोर्ट में जाने के लिए पहले चालान की रकम का 50% जमा करना अनिवार्य होगा।

3. उदाहरण: 10,000 का गलत चालान है। SDM ने खारिज किया। कोर्ट जाना है तो पहले 5,000 जमा करो। गरीब ऑटो वाला, बाइक वाला कहाँ से लाएगा?

बिंदु 2: वकीलों का आरोप - सरकार ने विश्वास तोड़ा

- कोऑर्डिनेशन कमिटी को

मीडिया रिपोर्ट्स से पता चला कि

लाखों पेंडिंग चालान इन नई आर्थोरीटिज को ट्रांसफर होंगे। - कमिटी ने 27.08.2026 को दिल्ली सरकार के संबंधित मंत्री को और 07.09.2026 को मुख्यमंत्री और कानून मंत्री को विस्तृत आपत्ति दी।

- कानून मंत्री के साथ 2 मीटिंग में आश्वासन मिला कि जब तक मामला केंद्र सरकार के सामने नहीं रखा जाता, SDM नियुक्ति लागू नहीं होगी।

- परंतु मीडिया रिपोर्ट्स से पता चला कि फूड एंड सप्लाई ऑफिसर, तहसीलदारों को नोटिफाई कर दिया गया। कमिटी ने इसे रविश्वासघात और शर्मभार चिंता वाला बताया।

बिंदु 3: यह सिर्फ वकीलों की हड़ताल नहीं, संविधान पर चोट है - 3 संवैधानिक अधिकार खतरों में

1. न्यायपालिका की स्वतंत्रता (Separation of Powers - अनुच्छेद 50): संविधान कहता है - न्याय करने का काम न्यायपालिका का है, कार्यपालिका का नहीं। SDM, तहसीलदार, फूड ऑफिसर - ये सब कार्यपालिका/सरकार के अधिकारी हैं। उनको जज का काम देना संविधान के मूल ढांचे के खिलाफ है। वकीलों का तर्क - 'सरकार खुद

चालान काटेंगी, सरकार का ही अधिकारी फैसला करेगा - तो न्याय कैसे मिलेगा?'

2. न्याय तक पहुंच का अधिकार (Access to Justice - अनुच्छेद 21 और 14): सुप्रीम कोर्ट ने कई फैसलों में कहा है - 50% प्री-डिपॉजिट जैसी शर्त न्याय के रास्ते में रबरबंद रुकावट है। यह अमीर और गरीब में फर्क करती है। जिसके पास पैसा है वही अपील कर पाएगा। यह समानता के अधिकार (अनुच्छेद 14) का उल्लंघन है।

3. नेचुरल जस्टिस का सिद्धांत: कोई भी व्यक्ति अपने ही मामले में जज नहीं हो सकता। ट्रैफिक पुलिस दिल्ली सरकार के अधीन, SDM भी दिल्ली सरकार के अधीन - तो निष्पक्ष सुनवाई कैसे होगी?

बिंदु 4: जनता को क्या परेशानी होगी? - जनहित विश्लेषण

- आम आदमी के लिए कोर्ट के दरवाजे बंद: पहले आप ट्रैफिक कोर्ट में सीधे मजिस्ट्रेट को कह सकते थे - रसाहब ये चालान गलत है। अब पहले SDM दफ्तर, फिर तहसीलदार के चक्कर।

- भ्रष्टाचार और देरी का डर: ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट कानूनी रूप

से प्रशिक्षित और स्वतंत्र होते हैं डिपार्टमेंटल अधिकारी पहले से ही दूसरे कामों में व्यस्त हैं। फैसले में देरी और मनमानी की आशंका। - डिजिटल डिवाइड: 45 दिन में पोर्टल पर दस्तावेजी सबूत अपलोड करना - कितने ऑटो चालक, बुजुर्ग, ग्रामीण कर पाएंगे?

- राजस्व वसूली का हथियार: वकीलों का आरोप है कि यह सुधार नहीं, सरकार की राजस्व वसूली आसान करने की योजना है। 'चालान भरो, फिर बहस करो' की नीति।

बिंदु 5: 21 सितंबर को क्या होगा?

- दिल्ली के सभी जिला कोर्ट - तीस हजारी, पटियाला हाउस, कड़कड़डूमा, रोहिणी, द्वारका, साकेत में वकील किसी भी कोर्ट में फिजिकल या वर्चुअल पेश नहीं होंगे।

- सुबह 11:30 बजे कोर्ट परिसर के बाहर शांतिपूर्ण, गरिमामय प्रदर्शन। - कमिटी की चेतावनी - अगर मांग नहीं मानी तो आंदोलन और तेज होगा।

संपादकीय निष्कर्ष - न्याय बाबू के हाथ में नहीं, जज के हाथ में सुरक्षित है यह लड़ाई वकीलों की फीस की नहीं है। यह इस सिद्धांत की लड़ाई है कि नागरिक को सजा देने या निर्दोष साबित करने का अधिकार किसके पास हो।

यदि आज ट्रैफिक चालान का फैसला SDM करेगा, तो कल प्रॉपर्टी विवाद तहसीलदार करेगा, परसों कोई और मामला फूड ऑफिसर करेगा - फिर कोर्ट की जरूरत क्या रहेगी? सरकार को चाहिए कि 50% प्री-डिपॉजिट जैसी कठोर शर्त हटाए और विवादित चालान का निपटारा ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट के पास ही रहने दे। तकनीक का इस्तेमाल पारदर्शिता के लिए हो, नागरिक के अधिकार छीनने के लिए नहीं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में युवा पीढ़ी ने बता दिया है कि अब छात्र को फॉर्च्यूनर का काफिला नहीं, नंगे पांव साथ चलने वाला साथी चाहिए

नंगे पांव वाला उपाध्यक्ष - जब डीयू ने संगठन नहीं, संवेदना को वोट दिया DUSU केंद्रीय पैनल में निर्दलीय की एंट्री और वो भी सबसे बड़े जनदेश के साथ डीटीसी कंडक्टर के बेटे दीपांशु '100कीन' ने 30,615 वोटों से रचा इतिहास

लेख पिकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता नेत्री भाजपा प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

19 सितंबर 2026 को जब मतपेटियां खुलीं, तो सबसे बड़ा आंकड़ा किसी बड़े छात्र संगठन का नहीं था। उपाध्यक्ष पद पर निर्दलीय उम्मीदवार दीपांशु शौकीन उर्फ दीपांशु 100कीन को 30,615 वोट मिले। पूरे पैनल में सबसे ज्यादा। अध्यक्ष पद जीतने वाले ABVP के यश डबास को 24,576 वोट मिले। यानी उपाध्यक्ष को अध्यक्ष से भी 6000 वोट ज्यादा।

देश के सबसे शोर वाले छात्र चुनाव इसू में इस बार शोर नहीं, एक सन्नाटा जीता है। सन्नाटा उस इमारत के गीतने का, जो सत्य निकेतन में गिरी थी। और एक लड़के के उतारे हुए जूतों का। कौन है दीपांशु शौकीन? - सफर कहाँ से शुरू हुआ

1. जड़ें पीरागढ़ी में: मूलतः पश्चिमी दिल्ली के पीरागढ़ी के रहने वाले हैं। पिता राकेश कुमार DTC में टेके पर कंडक्टर हैं, मां आंगनवाड़ी कार्यकर्ता। एक ऐसा घर जहां नौकरी स्थायी नहीं, पर मेहनत स्थायी है। मुख्य बिंदु - ये जीत सिर्फ जीत नहीं, सुवाल है

तथ्य 1 - हॉस्टल का संकट: DU के 91 में से 71 कॉलेजों में हॉस्टल है ही नहीं। ढाई लाख नियमित छात्रों के लिए सीटें सिर्फ 7 हजार के आसपास। यानी 20 में से 19 छात्र उसी तरह के निजी PG में रहने को मजबूर हैं, जैसा सत्य निकेतन में था।

तथ्य 2 - इतिहास दोहराया गया: सत्य निकेतन में पहली बार इमारत नहीं गिरी। अप्रैल 2022 में भी उसी इलाके में PG में बदला जा रहा एक मकान गिरा था, जिसमें बिलाल और नसीम नाम के दो

परिवहन विशेष

दिनांक 21 सितंबर 2026 | अंक 166 | वर्ष 04 | कीमत 5 रुपये

नंगे पाँव वाला उपाध्यक्ष - DTC कंडक्टर के बेटे जीत

दीपांशु 100कीन को 30615 वोट - DUSU इतिहास में पहली बार निर्दलीय केंद्रीय पैनल में

DU में ही हॉस्टल

DU में ही हॉस्टल

मुख्य तथ्य

जीत का अंतर - 30615 वोट (30615 वोटों में जीत) को 30615 वोटों से हराया, अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज

जीत का अंतर - 30615 वोट (30615 वोटों में जीत) को 30615 वोटों से हराया, अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज

मुख्य तथ्य

जीत का अंतर - 30615 वोट (30615 वोटों में जीत) को 30615 वोटों से हराया, अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज

मुख्य तथ्य

जीत का अंतर - 30615 वोट (30615 वोटों में जीत) को 30615 वोटों से हराया, अब तक की सबसे बड़ी जीत दर्ज

चुनाव के प्रमुख बिंदु:

“यह जीत हर वित्तिय छात्र की आवाज है। हम हॉस्टल, सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए लड़ेंगे।” - दीपांशु 100कीन

दीपांशु 100कीन का बयान:

“यह जीत हर वित्तिय छात्र की आवाज है। हम हॉस्टल, सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए लड़ेंगे।” - दीपांशु 100कीन

वो मोड़ जिसने चुनाव बदल दिया - 6 सितंबर का हादसा 6 सितंबर, रविवार, सत्यनिकेतन का 'हॉस्टल डेज' पीजी। बेसमेंट में काम के दौरान पूरी इमारत बैठ गई। 5 DU छात्र और 2 मजदूरों की मौत।

इसी के बाद दीपांशु ने जूते-चप्पल त्याग दिए। ऐलान किया - जब तक मुझे छात्रों को ईसाफ नहीं, जब तक PG-हॉस्टल की मनमानी पर कार्रवाई नहीं, तब तक नंगे पांव रहूंगा। इसे नाम दिया 'न्याय सत्याग्रह'। सितंबर की तपती दिल्ली में 13 दिन तक नंगे पांव प्रचार, मार्च और अनशन। उनका नारा बना - 'डीयू का यकीन, दीपांशु शौकीन' और पोस्टर पर 'दीपांशु 100कीन'।

जीत के बाद पहली तस्वीर में उनके हाथ में पोस्टर था - 'डीयू मांगे हॉस्टल'।

मुख्य बिंदु - ये जीत सिर्फ जीत नहीं, सुवाल है

तथ्य 1 - हॉस्टल का संकट: DU के 91 में से 71 कॉलेजों में हॉस्टल है ही नहीं। ढाई लाख नियमित छात्रों के लिए सीटें सिर्फ 7 हजार के आसपास। यानी 20 में से 19 छात्र उसी तरह के निजी PG में रहने को मजबूर हैं, जैसा सत्य निकेतन में था।

तथ्य 2 - इतिहास दोहराया गया: सत्य निकेतन में पहली बार इमारत नहीं गिरी। अप्रैल 2022 में भी उसी इलाके में PG में बदला जा रहा एक मकान गिरा था, जिसमें बिलाल और नसीम नाम के दो

मजदूरों की मौत हुई थी। तब कैपस नहीं हिला था।

तथ्य 3 - पार्टियों के लिए संदेश: ABVP ने 3 सीटें जीतीं (अध्यक्ष-यश डबास, सचिव-रिया छाबड़ी 21,650 वोट, संयुक्त सचिव-लक्ष्मण राज सिंह 16,615 वोट), पर NSUI का केंद्रीय पैनल में खाता भी नहीं खुला। NOTA ने इस बार 4 सीटों पर मिलाकर 23,942 वोट लिए, जो कई सीटों पर जीत के अंतर से ज्यादा था।

जनसूचना - हर अभिभावक के लिए अदालत और निगम के सामने अब PG की जांच के 4 पैमाने तय हैं, जो हर माता-पिता को अपने बच्चे का कमरा लेने से पहले पूछने चाहिए:

1. मंजूरीशुदा नक्शा है या नहीं?

2. असल में कितनी मंजिलें बनी हैं?

3. बेसमेंट/तलछाने में कोई अवैध फेरबदल तो नहीं?

4. स्ट्रक्चर और फायर सेफ्टी सर्टिफिकेट है या नहीं?

नगर निगम ने 4 मंजिल से ऊपर बिना मंजूरी वाले ढांचों को सील करने का आदेश भी दिया है।

निष्कर्ष: यह कहानी किसी पार्टी के हार-जीत की नहीं है। यह कहानी उस दर्द की है जिसे एक लड़के ने अलार्म बना लिया। जब संगठन ने टिकट छीना तो छात्रों ने जनदेश दे दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय ने बता दिया है कि अब छात्र को फॉर्च्यूनर का काफिला नहीं, नंगे पांव साथ चलने वाला साथी चाहिए।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिकी कुंडू

मुंबई साइबर पुलिस ने हाल ही में छह व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है—जिनमें एक आईआईटी दिल्ली स्नातक और एक निजी बैंक संचालन प्रबंधक शामिल हैं—जिन्होंने दहिस्ते के 68 वर्षीय सेवानिवृत्त व्यवसायी के खिलाफ ₹ 1.12 करोड़ का “डिजिटल गिरफ्तारी” घोटाला रचा। यह मामला इस बात को उजागर करता है कि अब

अत्यधिक शिक्षित और वित्तीय रूप से उच्च वर्ग के लोग भी ऐसे धोखाधड़ी में शामिल हो रहे हैं, जिससे व्यापक जागरूकता अभियानों के बावजूद इस खतरे को रोकना कठिन हो गया है। आईआईटी स्नातक और बैंक प्रबंधक का डिजिटल गिरफ्तारी घोटाले में शामिल होना चिंता का विषय है।

पीडित

• 68 वर्षीय सेवानिवृत्त व्यवसायी, दहिस्ते, मुंबई।

• 30 जुलाई से 12 अगस्त 2026 के बीच निशाना बनाया गया।

कार्यप्रणाली (Modus Operandi)

- धोखेबाजों ने दूरसंचार विभाग (DoT) अधिकारियों और बाद में पुलिस अधिकारियों के रूप में खुद को प्रस्तुत किया। - पीडित को बताया गया कि उसके आधार विवरण का उपयोग ₹ 238 करोड़ के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में किया गया है।

• नकली सुप्रीम कोर्ट नोटिस और जाली पुलिस दस्तावेज व्हाट्सएप वीडियो कॉल के माध्यम से दिखाए गए।

• पीडित को धमकी दी गई कि यदि उसने मामला उठाया तो उसे पूरी परिवार को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

• उसे लगभग दो सप्ताह

तक “डिजिटल गिरफ्तारी” में रखा गया, हर दो घंटे में लोकेशन साझा करने के लिए मजबूर किया गया।

वित्तीय मार्ग (Financial Trail)

- पीडित को फिक्स्ड डिपॉजिट तोड़ने और ₹ 1.12 करोड़ कई खातों में स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया गया।

• धन को म्यूचुअल खातों और एक गोल्ड ट्रेडिंग फर्म के बैंक खाते के माध्यम से भेजा गया।

• फर्म से जुड़े सिम कार्ड का उपयोग लेनदेन के लिए ओटीपी संभालने हेतु किया गया।

• अंततः धन बिजनेस, उत्तर प्रदेश में siphon कर लिया गया।

आरोपी

- आईआईटी दिल्ली स्नातक, वेब डेवलपर - पहले 2021 के धोखाधड़ी मामले में बुक किया गया।

- निजी बैंक संचालन प्रबंधक - ओटीपी रूटिंग और म्यूचुअल खातों को संभाला।

- गोल्ड ट्रेडिंग फर्म निदेशक - मनी लॉन्ड्रिंग के लिए खाते उपलब्ध कराए।

- निजी इकाई - म्यूचुअल खाते और सिम कार्ड प्रबंधित किए।

- निजी इकाई - धन निकासी और लॉजिस्टिक्स में

सहायता की। पुलिस कार्रवाई

मामला मुंबई के नॉर्थ साइबर पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया।

- छह गिरफ्तारियां की गईं; 20 मोबाइल फोन, लैपटॉप, 25 बैंक खाते, एटीएम कार्ड और आधार कार्ड जब्त किए गए।

9 जांच डीसीपी बजरंग

बंसोडे के पर्यवेक्षण में वरिष्ठ निरीक्षक प्रमोद कांबले और सुनील लोखंडे द्वारा की गई।

क्यों यह मामला महत्वपूर्ण है

1. उच्च वर्ग की भागीदारी: आईआईटी स्नातक और बैंक प्रबंधक की भागीदारी दिखाती है कि साइबर अपराध अब केवल हाशिए के तत्वों तक सीमित नहीं है—यह अब शिक्षित

पेशेवरों को भी आकर्षित करता है।

2. मनोवैज्ञानिक नियंत्रण: पीडित को डिजिटल रूप से कैद किया गया, जो ऐसे घोटालों के मानसिक दबाव पहलू को उजागर करता है।

3. प्रणालीगत कमजोरी: जागरूकता अभियानों के बावजूद, धोखेबाज प्राथिकरण के डर और कमजोर सत्यापन

मामला मुंबई के नॉर्थ साइबर पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया।

छह गिरफ्तारियां की गईं; 20 मोबाइल फोन, लैपटॉप, 25 बैंक खाते, एटीएम कार्ड और आधार कार्ड जब्त किए गए।

9 जांच डीसीपी बजरंग

बंसोडे के पर्यवेक्षण में वरिष्ठ निरीक्षक प्रमोद कांबले और सुनील लोखंडे द्वारा की गई।

क्यों यह मामला महत्वपूर्ण है

1. उच्च वर्ग की भागीदारी: आईआईटी स्नातक और बैंक प्रबंधक की भागीदारी दिखाती है कि साइबर अपराध अब केवल हाशिए के तत्वों तक सीमित नहीं है—यह अब शिक्षित

पेशेवरों को भी आकर्षित करता है।

2. मनोवैज्ञानिक नियंत्रण: पीडित को डिजिटल रूप से कैद किया गया, जो ऐसे घोटालों के मानसिक दबाव पहलू को उजागर करता है।

3. प्रणालीगत कमजोरी: जागरूकता अभियानों के बावजूद, धोखेबाज प्राथिकरण के डर और कमजोर सत्यापन

तंत्र का फायदा उठाते हैं।

4. वित्तीय मनी लॉन्ड्रिंग नेटवर्क: गोल्ड ट्रेडिंग फर्मों और म्यूचुअल खातों का उपयोग धन की जटिल परतों को दर्शाता है।

सिफारिशें

- जन संदेश: यह सुदृढ़ करें कि कोई भी पुलिस या सरकारी एजेंसी डिजिटल रूप से गिरफ्तारी नहीं करती।

- बैंकिंग सतर्कता: म्यूचुअल खातों और ओटीपी दुरुपयोग की निगरानी को मजबूत करें।

- सीमा पार समन्वय: कई ऐसे सिंडिकेट रैज्यूर का काफिला

सीमाओं के पार काम करते हैं; खुफिया साझाकरण महत्वपूर्ण है।

- पीडित जागरूकता: 1930 साइबरक्राइम हेल्थलाइन या

स्थानीय पुलिस स्टेशन पर तुरंत रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करें।

● ● ● ● ●

● ● ● ● ●

● ● ● ● ●

● ● ● ● ●

● ● ● ● ●

● ● ● ● ●



पारुल भटनागर
(एस्ट्रो-न्यूमरो-वास्तु विशेषज्ञ)

8570075550

parulbhatnagar@gmail.com

वास्तु विशेष

संतुलन | समृद्धि | सुख | शांति | सकारात्मक ऊर्जा

सही दिशा, सही वास्तु, बेहतर जीवन



हमारी स्वास्थ्य-यात्रा में दिशाओं की एक स्पष्ट तात्त्विक पहचान से शुरुआत होती है: दक्षिण-पूर्व = अग्नि। और दोषों के साथ इसका संबंध भी उतना ही महत्वपूर्ण है: अग्नि, पित्त का एक भाग है; जल उसका दुसरा सहयोगी तत्व है। एक बार यह समझ आ जाए, तो स्वास्थ्य से जुड़ी पूरी कहानी कहीं अधिक तार्किक हो जाती है।

तत्व से दोष तक

वात = वायु + आकाश। यह गति, चलयमानता, परिसंचरण और शरीर की कार्यात्मक प्रवाह-प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है। पित्त = अग्नि + जल। यह ऊष्मा, पाचन और रूपांतरण को नियंत्रित करता है, जबकि जल उस अग्नि को संतुलित, नियंत्रित और वहन करने का कार्य करता है। कफ = जल + पृथ्वी। यह जुड़ाव, पोषण, स्थिरता, स्निग्धता और संचय को नियंत्रित करता है। इसलिए किसी असंतुलन का अर्थ यह नहीं है कि कोई तत्व केवल 'खराब' है। वह अत्यधिक हो सकता है, कम हो सकता है, अवरुद्ध हो सकता है, अत्यधिक गर्म हो सकता है, भारीपन से दब सकता है या अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाने में असमर्थ हो सकता है। यही अंतर पूरी व्याख्या को बदल देता है।

जब दक्षिण-पूर्व असंतुलित हो तो क्या दिखाई दे सकता है ?

इस श्रृंखला में उपयोग किए जा रहे पारंपरिक मेडिकल वास्तु दृष्टिकोण के अनुसार, इस दिशात्मक क्षेत्र में असंतुलन कई प्रकार की शारीरिक या मानसिक प्रवृत्तियों के रूप में प्रतिबिंबित हो सकता है। उदाहरण के लिए: एसिडिटी, अपच, पोषक तत्वों का कमजोर अवशोषण, अधिक अम्लता, लिवर या गॉलब्लैडर से जुड़ी गड़बड़ियाँ, सूजन, पोलिया/हेपेटाइटिस जैसी चिंताएँ, हार्मोनल असंतुलन, एनीमिया/कम प्रतिरक्षा से जुड़े पैटर्न तथा संबंधित सूक्ष्म क्षेत्रों में अन्य पाचन एवं मेटाबॉलिक प्रवृत्तियाँ। कृपया 'प्रतिबिंबित हो सकता है' शब्दों को ध्यान से पढ़ें। ये संभावित पारंपरिक संबंध हैं; इसका अर्थ यह नहीं है कि

किसी वास्तु-दोष वाले घर में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इन स्थितियों से अवश्य प्रभावित होगा।

एक ही दिशा अलग-अलग परिणाम क्यों दे सकती है ?

इसे इस प्रकार समझें: अग्नि-क्षेत्र में जल रूपांतरण को दबा सकता है; अत्यधिक बनावट या गर्मी पित्त बढ़ा सकती है; कटी हुई दिशा अग्नि को कमजोर कर सकती है; और भारी स्टोरेज उसे दबा सकता है। प्रॉपर्टी की प्रत्येक स्थिति तत्व को अलग तरीके से प्रभावित करती है।

कट (CUT) का अर्थ है कमी।

एक्सटेंशन (EXTENSION) का अर्थ है अतिशयता। भारी स्टोरेज पृथ्वी तत्व और कफ जैसी धारण-प्रवृत्ति बढ़ाता है। जल तरलता बढ़ाता है, लेकिन जमा हुआ जल रुकाव या रिटेंशन भी दर्शाता है। अग्नि पित्त जैसी ऊष्मा बढ़ाती है। इलेक्ट्रिकल उपकरण सक्रियता/अग्नि जैसी उत्तेजना बढ़ाते हैं। टॉयलेट या सीविक व्यवस्था जल के साथ अपशिष्ट और निष्कासन की प्रकृति भी जोड़ती है। गड्डा (PIT) नीचेपन या अवनमन की स्थिति बनाता है। अत्यधिक ऊँचाई या भार क्षेत्र की धारण-क्षमता को बदलता है। इसलिए दक्षिण-पूर्व में दो अलग-अलग दोषों का स्वास्थ्य पर एक जैसा प्रभाव होना आवश्यक नहीं है। दोष का अधिक या कम होना भी महत्वपूर्ण है यहीं वात-पित्त-कफ की समझ इस लेख को अधिक उपयोगी बनाती है।

उच्च वात पारंपरिक रूप से बेचैनी, अनियमितता, भय, शुष्कता या अत्यधिक गति के रूप में दिखाई दे सकता है। कम या अवरुद्ध वात सुस्त या रुकी हुई कार्यात्मक गति के रूप में प्रकट हो सकता है। उच्च पित्त गर्मी, जलन, चिड़चिड़ापन या अत्यधिक रूपांतरण जैसा दिखाई दे सकता है।

आपके स्वास्थ्य की 8 दिशाएँ : संतुलित तात्त्विक तत्व, वात—पित्त—कफ संबंध



क्या बेडरूम को स्टोर बना लिया गया ? क्या मशीनरी लगाई गई ? क्या टॉयलेट की जगह बदली गई ? क्या छत की ऊँचाई बढ़ाई गई ? क्या भारी अव्यवस्था या सामान जमा हो गया ? समय-क्रम बहुत कुछ बता सकता है। लेकिन समय का मेल भी केवल एक संकेत है—यह चिकित्सकीय कारण का प्रमाण नहीं है। इसे अपने घर पर आजमाएँ दक्षिण-पूर्व दिशा को सही तरीके से चिह्नित करें। अब उसे तुरंत अच्छा या बुरा कहने से बचें। इसके बजाय पूछें: इसका मूल तत्व क्या है ?

अग्नि। मैंने इस क्षेत्र में क्या जोड़ा है ? क्या मैंने इस तत्व को आवश्यकता से अधिक बढ़ा लिया है ? क्या मैंने इसे दबा लिया है ? क्या मैंने इसके विपरीत तत्व को यहाँ ला दिया है ? क्या मैंने इसे पृथ्वी तत्व के भार से दबा लिया है ? क्या मैंने इसे अत्यधिक अग्नि से गर्म कर लिया है ? क्या मैंने गति को अवरुद्ध कर लिया है ? क्या मैंने आवश्यक आकाश/स्पेस को कम कर लिया है ? क्या जल प्रवाहित हो रहा है—या केवल जमा हो रहा है ?

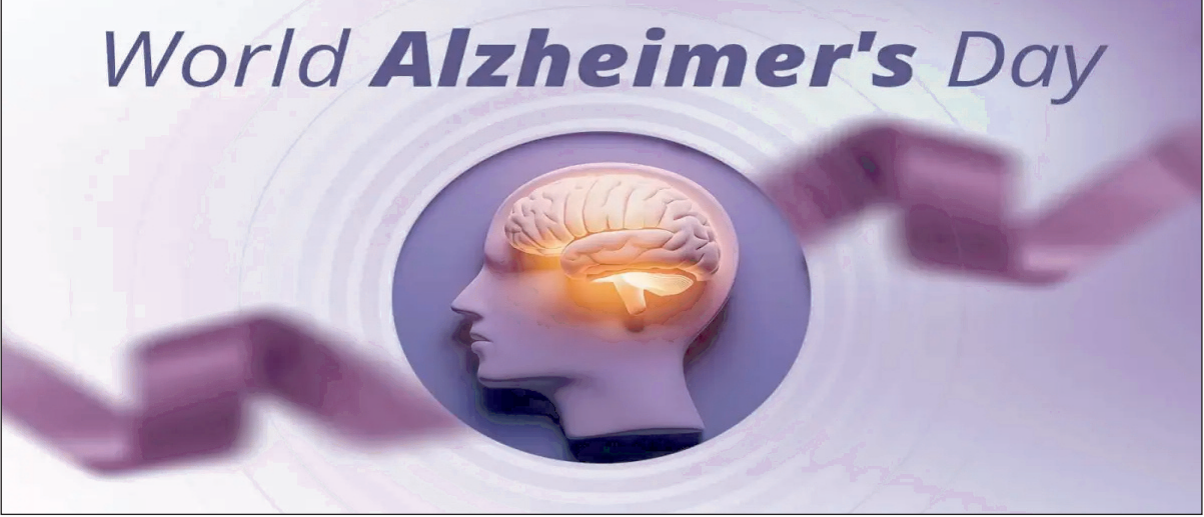
फिर वहाँ रहने वाले लोगों को देखें। उस क्षेत्र में सबसे अधिक समय कौन बिताता है ? वास्तव में संबंधित पैटर्न किस व्यक्ति में दिखाई दे रहा है ? क्या उस व्यक्ति का एस्ट्रो चार्ट भी उसी तात्त्विक संवेदनशीलता को दोहराता है ? यही वह व्यक्तिगत स्तर है जिसे सामान्यीकृत वास्तु अक्सर नजरअंदाज कर देता है। **स्वास्थ्य का बड़ा संदेश** मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु का उद्देश्य कम्पास की दिशाओं के साथ बीमारियों को जोड़कर आपको डराना नहीं है। इसका उद्देश्य संतुलन को समझना है। शरीर को वायु चाहिए—लेकिन अनियंत्रित गति नहीं। उसे आकाश चाहिए—लेकिन

अत्यधिक बिखराव नहीं। उसे अग्नि चाहिए—लेकिन जलन नहीं। उसे जल चाहिए—लेकिन अनियंत्रित रिटेंशन नहीं। उसे पृथ्वी चाहिए—लेकिन ठहराव नहीं। यही पाँच तत्व प्रॉपर्टी में भी अध्ययन किए जाते हैं। इसीलिए दक्षिण-पूर्व की व्याख्या कभी भी केवल एक वस्तु या याद किए हुए एक लक्षण के आधार पर नहीं की जानी चाहिए। दिशा का तत्व, दोषों का संयोजन, सटीक माइक्रो-जोन, व्यक्ति का एस्ट्रो चार्ट और वास्तविक चिकित्सकीय स्थिति—इन सभी का आपस में संबंध देखकर ही निष्कर्ष निकालना चाहिए। **सुधार सबसे अंत में आता है**

विश्लेषण के बाद ही सुधार शुरू होना चाहिए। कभी-कभी सुधार व्यावहारिक होता है: अव्यवस्था हटाना, लीकेज ठीक करना, अत्यधिक गर्मी या ठंडक को कम करना, वेंटिलेशन सुधारना, अनुचित स्टोरेज या मशीनरी को स्थानांतरित करना, या कमरे के उपयोग को ठीक करना। कभी-कभी कट, एक्सटेंशन, गड्डा, ऊँचाई का अंतर या कोई संरचनात्मक विशेषता अधिक विशेषज्ञ वास्तु आकलन की माँग करती है। और कभी-कभी प्रॉपर्टी में कोई सार्थक संबंध दिखाई ही नहीं देता। इस संभावना को भी खुला रखना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात—वास्तु चिकित्सा का विकल्प नहीं है। यदि आपको लगातार या गंभीर लक्षण हैं, तो उचित योग्य स्वास्थ्य-विशेषज्ञ से परामर्श करें। मेडिकल एस्ट्रो-वास्तु को पारंपरिक पर्यावरणीय दृष्टिकोण के रूप में चिकित्सा निदान और उपचार के साथ उपयोग किया जा सकता है—उनके स्थान पर नहीं। दक्षिण-पूर्व से आगे बढ़ने से पहले स्वयं से पूछें: “क्या यहाँ अग्नि तत्व इतना संतुलित है कि वह अपनी स्वाभाविक भूमिका ठीक से निभा सके ?” क्योंकि जब आप तत्व को समझ लेते हैं, तो दोष को समझना आसान हो जाता है। और जब दोष समझ में आ जाता है, तो शरीर, एस्ट्रो चार्ट और प्रॉपर्टी के बीच का संबंध कहीं अधिक अर्थपूर्ण हो जाता है। हमारी मेडिकल वास्तु श्रृंखला की यात्रा जारी है! दक्षिण-पूर्व को समझने के बाद अब हम दक्षिण दिशा की ओर बढ़ेंगे—उसका तत्व, अग्नि, और वात, पित्त एवं कफ के साथ उसका रोचक संबंध। दक्षिण की ऊर्जाएँ हमारे स्वास्थ्य और कल्याण को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं ? इन संबंधों को हमारे आगामी लेख में अगले सोमवार जानिएँ

इस श्रृंखला से संबंधित किसी भी प्रश्न के लिए आप मुझे DM/WhatsApp कर सकते हैं: 8750075550

21 सितंबर : विश्व अल्जाइमर दिवस अल्जाइमर एवं डिमेंशिया : स्मृति की रक्षा, संवेदना और समग्र देखभाल ही बचाव की दिशा



लेखक : डॉ. रूप कुमार बनर्जी, होम्योपैथिक चिकित्सक, गोरखपुर, परिवहन विशेष समाचार पत्र

उम्र बढ़ने के साथ कभी-कभी कुछ भूल जाना सामान्य माना जाता है, लेकिन जब भूलने की समस्या लगातार बढ़ने लगे, परिचित लोगों या स्थानों को पहचानने में कठिनाई होने लगे, बातचीत और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होने लगे अथवा रोजमर्रा के कार्यों में परेशानी आने लगे, तो इसे सामान्य वृद्धावस्था समझकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। यह डिमेंशिया अथवा अल्जाइमर रोग का शुरुआती संकेत हो सकता है। अल्जाइमर रोग डिमेंशिया का सबसे सामान्य कारण है और लगभग 60 से 70 प्रतिशत मामलों में इसकी भूमिका होती है। डिमेंशिया केवल याददाश्त की समस्या नहीं है, यह सोचने, समझने, भाषा, व्यवहार तथा दैनिक जीवन की कार्यक्षमता को भी प्रभावित करता है। **भूलने से आगे की बीमारी – इन लक्षणों को न करें**

नजरअंदाज

- बार-बार एक ही प्रश्न पूछना
- वस्तुएं रखकर भूल जाना
- परिचित रास्ते में भटक जाना
- सही शब्द खोजने में कठिनाई
- समय और स्थान को लेकर भ्रम
- निर्णय लेने में परेशानी और स्वभाव में असामान्य परिवर्तन
- ये ऐसे संकेत हैं जिन पर तुरंत चिकित्सकीय सलाह लेना आवश्यक है। प्रारंभिक मूल्यांकन इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि स्मृति में कमी के पीछे हमेशा अल्जाइमर ही कारण नहीं होता। कई अन्य चिकित्सकीय स्थितियां भी संज्ञानात्मक क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं।

होम्योपैथी : व्यक्ति-केंद्रित समग्र दृष्टिकोण

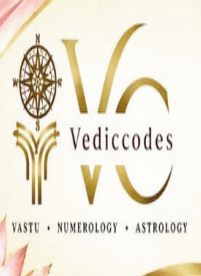
होम्योपैथी में रोगी का मूल्यांकन केवल एक शिकायत के आधार पर नहीं, बल्कि उसके समग्र लक्षण-समूह, मानसिक एवं भवनात्मक स्थिति, नींद, व्यवहार तथा अन्य शारीरिक लक्षणों को ध्यान में रखकर किया जाता है। अल्जाइमर एवं डिमेंशिया की समग्र देखभाल में होम्योपैथिक चिकित्सक रोगी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं का आकलन करते हुए नींद, चिंता, बेचैनी, भय, चिड़चिड़ापन अथवा अन्य साथ चल रही समस्याओं पर विशेष ध्यान देता है।

होम्योपैथी ही एकमात्र ऐसी विधा है जिसमें चिकित्सक धैर्यपूर्वक मरीज एवं उनके तीमारदारों की बात सुनते हैं, उनसे लक्षण पूछते हैं और लक्षणों के हिसाब से दवा देते हैं। अल्जाइमर में कई होम्योपैथिक दवाइयाँ और मंदर टिंक्चर ऐसी हैं जिनका सुयोग्य होम्योपैथिक चिकित्सक सही चुनाव करके मरीज को दें तो निश्चित रूप से आराम मिल सकता है। इसके साथ ही रोगी की नियमित चिकित्सा, सुरक्षा, पोषण और जीवनशैली संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखना भी महत्वपूर्ण है।

मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए जीवनशैली सबसे महत्वपूर्ण

डिमेंशिया के जोखिम को कम करने में स्वस्थ जीवनशैली की अहम भूमिका है।

1. नियमित शारीरिक गतिविधि और पैदल चलना
2. संतुलित और पौष्टिक आहार
3. धूपपान से बचाव
4. सामाजिक एवं मानसिक रूप से सक्रिय रहना
5. रक्तचाप, मधुमेह और कोलेस्ट्रॉल का उचित नियंत्रण
6. पर्याप्त नींद और श्रवण क्षमता में कमी होने पर उसका समय से उपचार



आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ

विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमरो वास्तु कंसल्टेंट

परिवहन विशेष News



अंक ज्योतिष भविष्यवाणी • 21 सितम्बर 2026

दिन का अंक: 4 | अनुशासन, व्यवस्था, स्थिरता, व्यावहारिकता और मजबूत आधार का दिन।

मूलांक 1 | पहल को व्यावहारिक योजना में बदलें

आज आपकी नेतृत्व क्षमता तब अधिक लाभ देगी जब उसके साथ व्यवस्था और धैर्य भी हो। परिणाम की ओर जल्दबाजी करने के बजाय वहां तक पहुंचने के जरूरी चरण व्यवस्थित करें। कार्यक्षेत्र या निजी जीवन का कोई निर्णय विवरण जांचने के बाद अधिक मजबूत हो सकता है।

मूलांक 2 | स्पष्टता से भावनात्मक स्थिरता बनाएं

आज सामने वाले के व्यवहार में बदलाव आपको अधिक महसूस हो सकता है, लेकिन अनुमान लगाने से बचें। व्यावहारिक और स्पष्ट संवाद भरोसा बढ़ा सकता है तथा रिश्ते को मजबूत कर सकता है। आशकाओं के बजाय वास्तविक शब्दों और व्यवहार पर ध्यान दें।

मूलांक 3 | रचनात्मकता को मजबूत ढांचा दें

आपके विचार तब अधिक मूल्यवान बनेंगे जब उन्हें व्यवस्थित और उपयोगी रूप दिया जाएगा। लेखन, शिक्षण, योजना या प्रस्तुति में एकाग्रता लाभ देगी। ध्यान बिखेरने से बचें; कई काम शुरू करने के बजाय एक महत्वपूर्ण काम पूरा करना अधिक संतोष देगा।

मूलांक 4 | आज आपका स्वाभाविक अंक विशेष रूप से समर्थित है

आज का अंक आपकी अनुशासित, व्यावहारिक और व्यवस्थित प्रकृति के साथ विशेष सामंजस्य बनाता है। योजना, दस्तावेज, धन, संपत्ति और संरक्षित कार्यों को मजबूत समर्थन मिल सकता है। किसी एक तरीके से चिपकने के बजाय व्यवस्था सुधारने के लिए पर्याप्त लचीलापन रखें।

मूलांक 5 | प्रतिबद्धता से पहले गति थोड़ी कम करें

आज बदलाव या गतिशीलता की इच्छा हो सकती है, लेकिन सावधानी से लिया गया निर्णय अधिक लाभ देगा। कोई नया प्रस्ताव, यात्रा या बातचीत आकर्षक लग सकती है, फिर भी महत्वपूर्ण विवरण पर ध्यान जरूरी है। अक्सर के साथ आने वाली जिम्मेदारी समझने के लिए पर्याप्त समय लें।

मूलांक 6 | व्यावहारिक सहयोग रिश्तों को मजबूत करेगा

परिवार या करीबी रिश्तों में लंबी चर्चा से अधिक भरोसेमंद कार्य उपयोगी हो सकता है। कोई छोटी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाना सामंजस्य बढ़ाएगा। जहां जरूरत हो मदद करें, लेकिन स्वस्थ सीमाएं रखें ताकि दूसरों की जिम्मेदारियां पूरी तरह आपकी न बन जाएं।

मूलांक 7 | निर्णय से पहले विचारों को व्यवस्थित करें

आज आपकी विश्लेषण क्षमता महत्वपूर्ण विवरण पकड़ने में मदद करेगी। प्राथमिकताएं लिखें, जानकारी की समीक्षा करें और तथ्य व अनुमान अलग रखें। शांत योजना आपका अगला निर्णय अधिक आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बनाएगी।

मूलांक 8 | दीर्घकालिक सुरक्षा चरणबद्ध तरीके से बनाएं

करियर और धन से जुड़े मामलों में अनुशासन और यथार्थवादी योजना लाभ देगी। आगे विस्तार से पहले बजट, प्रतिबद्धताओं और व्यावसायिक जिम्मेदारियों की समीक्षा करें। शॉर्टकट से बचें; आज का निरंतर प्रयास भविष्य के लिए मजबूत आधार बना सकता है।

मूलांक 9 | दृढ़ता से महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करें

आपकी ऊर्जा किसी कठिन व्यावहारिक काम या पुरानी जिम्मेदारी को पूरा करने में मदद कर सकती है। प्रगति अपेक्षा से थोड़ी हो तो निराश न हों। धैर्य, निरंतरता और विवरण पर ध्यान अधिक साफ और स्थायी परिणाम देगा।

कॉल / व्हाट्सएप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vedicodes.in

फेसबुक • इंस्टाग्राम • यूट्यूब: @vedicodes

Vedicodes - Your vibrations... our solutions



साप्ताहिकी अंकशास्त्र



डॉ. पूजाप्रसुन एन
गोल्ड मेडलिस्ट
Shivoham Shastr
shivohamshastr.com
07303855446

धनु राशि वैदिक ज्योतिष की नवम राशि है। कालपुरुष की राशि व्यवस्था में यह 240^o से 270^o तक का क्षेत्र घेरती है। धनु राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। इसका प्रतीक धनुष और बाण धारण करने वाला धनुर्धर है। इसलिए धनु राशि का मूल स्वभाव लक्ष्य, दिशा, ज्ञान, धर्म, दर्शन, उच्च शिक्षा, सत्य की खोज, यात्रा और जीवन के उच्च उद्देश्य से जुड़ा हुआ है।

धनु केवल आगे बढ़ने वाली राशि नहीं है, बल्कि वह यह भी जानना चाहती है कि आगे किस दिशा में बढ़ना है। इसी कारण धनु की ऊर्जा में गति के साथ दिशा, ज्ञान के साथ दर्शन और स्वतंत्रता के साथ उद्देश्य जुड़ा हुआ है।

धनु राशि का तत्व : अग्नि तत्व

धनु राशि अग्नि तत्व की राशि है। अग्नि तत्व ऊर्जा, उत्साह, साहस, प्रेरणा, चेतना, प्रकाश और आगे बढ़ने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

मेघ की अग्नि आरंभ करने वाली अग्नि है। सिंह की अग्नि आत्मप्रकाश और प्रतिष्ठा की अग्नि है। लेकिन धनु की अग्नि ज्ञान, धर्म, दर्शन और उच्च उद्देश्य की ओर जाने वाली अग्नि है।

इसलिए धनु की अग्नि केवल बाहरी action नहीं है। यह ज्ञान की अग्नि, जिज्ञासा की अग्नि, तप की अग्नि और सत्य की खोज की अग्नि भी है।

धनु राशि का स्वभाव :

द्विस्वभाव राशि:

धनु राशि द्विस्वभाव अर्थात् Dwishabhava राशि है।

मिथुन, कन्या, धनु और मीन चारों राशियां द्विस्वभाव मानी जाती हैं।

द्विस्वभाव का अर्थ केवल अस्थिरता या निर्णय न ले पाने की प्रवृत्ति नहीं है। इसका गहरा अर्थ है कि इस राशि में दो प्रकार की प्रवृत्तियों को साथ लेकर चलने की क्षमता होती है।

धनु के प्रतीक में भी यह द्वैत दिखाई देता है। इसका एक भाग मनुष्य और दूसरा भाग पशु के रूप में है। इसलिए धनु में instinct और intelligence, भौतिक अनुभव और उच्च ज्ञान, यात्रा और दर्शन, स्वतंत्रता और जिम्मेदारी जैसी दो धाराओं का मेल दिखाई देता है।

इसी कारण धनु व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार अपने दृष्टिकोण को बदल सकता है, लेकिन उसके भीतर किसी बड़े उद्देश्य की खोज बनी रह सकती है।

धनु राशि रात्रिबली है:

धनु राशि को रात्रिबली अर्थात् रात में बच प्राप्त करने वाली राशि माना जाता है। यह राशिगत बल की पारंपरिक classification है।

रात्रिबली होने का अर्थ यह नहीं है कि धनु राशि वाला व्यक्ति केवल रात में ही सफल होगा। इसका अर्थ राशि की पारंपरिक strength classification से है।

धनु के संदर्भ में इसे आंतरिक चिंतन, अध्ययन, मनन, दर्शन और भीतर की ओर ज्ञान की खोज से प्रतीकात्मक रूप से भी समझा जा सकता है।

व्यक्ति की वास्तविक शक्ति का निर्णय केवल राशि के रात्रिबली होने से नहीं किया जाता। लग्न, ग्रह, भाव, ग्रहबल, दृष्टि, दशा और अन्य योगों का भी अध्ययन आवश्यक है।

धनु राशि पृष्ठोदय राशि है:

धनु राशि को परंपरागत रूप से पृष्ठोदय राशि अर्थात् Prishtodaya Rashi माना जाता है। पृष्ठ का अर्थ पीछे का भाग और उदय का अर्थ rising है। इसलिए पृष्ठोदय राशि का अर्थ है ऐसी राशि जो अपने पृष्ठ या पीछे के भाग से उदित होने वाली मानी जाती है।

फलदीपिका की पारंपरिक राशि-वर्गीकरण परंपरा में धनु को पृष्ठोदय राशियों में रखा गया है। पृष्ठोदय को फलित दृष्टि से ऐसी प्रवृत्ति से जोड़ा जाता है जिसमें

परिणाम क्रमशः विकसित होते हैं और अनुभव तथा समय के साथ उनकी अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट हो सकती है।

धनु के लिए इसका प्रतीकात्मक संबंध बहुत सुंदर है। धनुष से बाण छोड़ने से पहले बाण को पीछे खींचना पड़ता है। वह पीछे खिंचाव वास्तव में आगे की गति के लिए शक्ति एकत्र करता है। इसी प्रकार धनु में अध्ययन, अनुभव, तैयारी और चिंतन भविष्य की उपलब्धि के लिए आधार बना सकते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि धनु व्यक्ति को निश्चित रूप से देर से सफलता मिलेगी। पृष्ठोदय केवल एक राशिगत संकेत है। वास्तविक फल भाव, भावेश, ग्रहबल, दशा, दृष्टि, नवांश और संपूर्ण कुंडली से निर्धारित होता है।

एक तकनीकी बात भी ध्यान देने योग्य है कि विभिन्न ग्रंथों और अनुवाद-परंपराओं में उदय-वर्गीकरण को लेकर पाठोंतर मिलता है। इसलिए धनु को पृष्ठोदय कहना पारंपरिक फलदीपिका-वर्गीकरण के अनुसार उचित है, जबकि कुछ उपलब्ध BPHS अनुवादों में अलग वर्गीकरण मिलता है।

धनु राशि और पृष्ठोदय का प्रतीकात्मक अर्थ:

धनु का धनुष पीछे खिंचता है, लेकिन उसका उद्देश्य आगे बढ़ना है। इसलिए धनु के लिए अनुभव पीछे छूट जाने वाली चीज नहीं है; वही अनुभव भविष्य के लक्ष्य के लिए शक्ति बनाता है।

फिर अनुभव।

धनु जान।

फिर विवेक।

फिर लक्ष्य।

और फिर लक्ष्य की ओर प्रस्थान।

यही धनु के पृष्ठोदय और धनुष-बाण के प्रतीक का सुंदर संबंध है।

धनु राशि का स्वामी : देवगुरु बृहस्पति:

धनु राशि के स्वामी देवगुरु बृहस्पति हैं। गुरु ज्ञान, धर्म, शिक्षा, सदाचार, न्याय, नीति, मंत्र, शास्त्र, आध्यात्मिकता, विस्तार, समृद्धि और मार्गदर्शन के कारक हैं।

इसलिए धनु राशि में गुरु के गुण विशेष रूप से दिखाई देते हैं। धनु केवल यह नहीं पूछता कि “मुझे क्या मिलेगा?” बल्कि यह भी पूछता है कि “इसका उद्देश्य क्या है?”

यही गुरु-तत्व धनु को जीवन के बड़े प्रश्नों की ओर ले जाता है।

धनु और गुरु का विशेष संबंध : मूलत्रिकोण:

धनु राशि गुरु की मूलत्रिकोण राशि भी मानी जाती है। पारंपरिक रूप से धनु के प्रारंभिक 10 अंशों को गुरु का मूलत्रिकोण क्षेत्र माना जाता है।

इस कारण धनु में गुरु के धर्म, ज्ञान, शिक्षा, दर्शन और सिद्धांत संबंधी गुण विशेष रूप से शक्तिशाली रूप में अभिव्यक्त हो सकते हैं।

लेकिन किसी कुंडली में गुरु के धनु में होने को अकेले देखकर पूर्ण शुभफल का निर्णय नहीं किया जाना चाहिए। भाव, भावेशत्व, दृष्टि, युति, अवस्था, नवांश और दशा का विचार आवश्यक है।

धनु राशि का गुण : सार्वत्रिक प्रकृति:

धनु राशि को पारशारी परंपरा में सार्वत्रिक प्रकृति से जोड़ा जाता है। सार्वत्रिकता ज्ञान, प्रकाश, सत्य, शुद्धता, विवेक और उच्च उद्देश्य का प्रतिनिधित्व करती है।

धनु की सार्वत्रिक प्रकृति व्यक्ति को केवल भौतिक अनुभव तक सीमित नहीं रखना चाहती। वह अनुभव से ज्ञान और ज्ञान से जीवन-दृष्टि प्राप्त करना चाहती है।

इसी कारण धनु का संबंध शिक्षक, गुरु, दार्शनिक, मार्गदर्शक, सलाहकार और शास्त्र-अध्ययन से जोड़ा जाता है।

धनु राशि का प्रतीक : धनुष और बाण:

धनु राशि का सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक धनुष और बाण है।

धनुष संभावित शक्ति का प्रतीक है और बाण उस शक्ति की दिशा का।

यह धनु राशि का बहुत गहरा ज्योतिषीय संदेश है।

केवल ऊर्जा होना पर्याप्त नहीं है।

ऊर्जा को लक्ष्य चाहिए। केवल ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है।

ज्ञान को दिशा चाहिए। धनु की वास्तविक शक्ति तब प्रकट होती है जब उसका ज्ञान और ऊर्जा किसी उच्च उद्देश्य की ओर केंद्रित हो।

धनु राशि : आधा मनुष्य और आधा पशु:

धनु राशि का स्वरूप मनुष्य और पशु दोनों के तत्वों को धारण करता है। पारंपरिक राशिवर्णन में इसके विभिन्न भागों को द्विपद और चतुष्पद प्रकृति से जोड़ा गया है। यह धनु के भीतर instinct और intelligence के मेल का प्रतीक है।

पशु भाग गति, स्वतंत्रता और प्राकृतिक ऊर्जा का प्रतीक है।

मनुष्य भाग विवेक, ज्ञान, दर्शन और दिशा का प्रतीक है।

धनु का विकास तब होता है जब instinct की intelligence और energy को wisdom की दिशा मिलती है।

धनु राशि और दिशा : पूर्व दिशा पारंपरिक राशिगत वर्गीकरण में

धनु का संबंध पूर्व दिशा से किया जाता है। पूर्व सूर्य के उदय, प्रकाश, जागरण और नई दिशा का प्रतीक है।

धनु का पूर्व दिशा से संबंध उसके ज्ञान, प्रकाश, उच्च उद्देश्य और आगे बढ़ने वाले स्वभाव के साथ सामंजस्य रखता है।

यहां यह अंतर समझना आवश्यक है कि राशि की दिशा और ग्रहों का Digbala एक ही बात नहीं है। Digbala ग्रह का बल है, जबकि दिशा राशिगत

classification का विषय है।

धनु राशि और कालपुरुष:

कालपुरुष के शरीर में धनु राशि जंघाओं अर्थात् thighs से संबंधित मानी जाती है।

जंघाएं शरीर को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रतीकात्मक रूप से यह धनु की यात्रा, गति, आगे बढ़ने और दूर के लक्ष्य तक पहुंचने की प्रकृति से जुड़ता है।

यदि धनु लग्न या धनु का विशेष प्रभाव हो तो ज्योतिषीय स्वास्थ्य-विचार में संबंधित शरीर-भागों को देखा जा सकता है, लेकिन इसे आधुनिक चिकित्सकीय निदान नहीं माना जाना चाहिए।

धनु राशि और नवम भाव:

धनु नवम राशि है और

प्राकृतिक राशि क्रम में नवम भाव के साथ इसका विशेष सामंजस्य माना जाता है।

नवम भाव धर्म, भाग्य, गुरु, पिता, उच्च शिक्षा, दर्शन, तीर्थयात्रा, दूर की यात्रा, शास्त्र और जीवन के उच्च सिद्धांतों से संबंधित है। इसीलिए धनु को समझने का एक महत्वपूर्ण सूत्र है :

धनु = धर्म + गुरु + ज्ञान + उच्च शिक्षा + दर्शन + यात्रा + उच्च उद्देश्य

धनु राशि और धर्म:

धनु की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणाओं में धर्म है।

यहां धर्म का अर्थ केवल धार्मिक पहचान नहीं है। वैदिक ज्योतिष में धर्म का व्यापक अर्थ है वह सिद्धांत जो जीवन को सही दिशा देता है।

धनु पूछता है : मैं क्या करूँ ?

मुझे किस सत्य का पालन करना चाहिए ?

मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ?

मेरे ज्ञान का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए ?

इसी कारण धनु का उच्च रूप व्यक्ति को केवल विद्वान नहीं बल्कि ज्ञानी और मार्गदर्शक बनाने की दिशा में ले जाता है।

धनु राशि और उच्च शिक्षा:

धनु उच्च शिक्षा, दर्शन, धर्मशास्त्र, न्याय, कानून, वेद-वेदांग, अध्यापन और उच्च ज्ञान की शाखाओं से संबंधित है।

गुरु के स्वामित्व के कारण धनु में ज्ञान केवल information नहीं बल्कि wisdom बनने की क्षमता रखता है।

धनु व्यक्ति किसी विषय को केवल सतह पर जानकर संतुष्ट नहीं होना चाहता। वह उसके पीछे का सिद्धांत, कारण, दर्शन और व्यापक अर्थ समझना चाहता है।

धनु राशि और सत्य:

धनु सत्य की खोज करने वाली

राशि है।

धनुष का बाण लक्ष्य की ओर सीधा जाता है। इसलिए धनु में स्पष्टवादिता और अपनी बात सीधे कहने की प्रवृत्ति हो सकती है।

लेकिन यही गुण असंतुलित होने पर कठोरता या अपनी मान्यता को अंतिम सत्य मानने में बदल सकता है।

इसलिए धनु का उच्च पाठ है :

सत्य के साथ करुणा।

ज्ञान के साथ विनम्रता।

और विश्वास के साथ विवेक।

धनु यात्रा की राशि है। लेकिन यात्रा का अर्थ केवल स्थान बदलना नहीं है।

यात्रा का एक स्तर है देश-विदेश घूमना।

दूसरा स्तर है नए लोगों और संस्कृतियों को जानना।

तीसरा स्तर है नए दर्शन और शास्त्रों को समझना।

और सबसे ऊँचा स्तर है स्वयं की खोज।

इसलिए धनु बाहरी यात्रा से आंतरिक यात्रा की ओर जाने वाली राशि बन सकती है।

धनु राशि और दर्शन:

धनु का स्वभाव philosophical है क्योंकि गुरु

इसका स्वामी है और अग्नि तत्व इसे सत्य की खोज की प्रेरणा देता है।

धनु केवल यह नहीं पूछता कि कोई घटना “कैसे” हुई।

वह पूछता है : “क्यों हुई ?”

“इसका अर्थ क्या है ?”

“इससे मुझे क्या सीखना चाहिए ?”

यही “क्यों” का प्रश्न धनु को दर्शन, अध्यात्म, वेदांत, धर्मशास्त्र, न्याय, ज्योतिष और उच्च ज्ञान की ओर ले जाता है।

धनु राशि और स्वतंत्रता:

धनु मानसिक और वैचारिक स्वतंत्रता को महत्व देता है।

उसे ऐसा वातावरण पसंद आता है जहां वह सीख सके, प्रश्न पूछ सके, यात्रा कर सके और अपनी समझ का विस्तार कर सके।

अत्यधिक नियंत्रण और संकीर्ण सोच धनु की ऊर्जा को दबा सकती है।

लेकिन स्वतंत्रता का उच्च रूप जिम्मेदारी से जुड़ा होना चाहिए।

स्वतंत्रता यदि धर्म से अलग हो जाए तो वह केवल मनमानी बन सकती है।

धनु राशि की सकारात्मक अभिव्यक्ति:

धनु का उच्च स्वरूप ज्ञान, सत्य, धर्म, उदारता, शिक्षा, मार्गदर्शन, साहस, दूरदृष्टि, आध्यात्मिक खोज, न्यायप्रियता और उच्च उद्देश्य में दिखाई देता है।

ऐसा व्यक्ति स्वयं आगे बढ़ने के साथ दूसरों को भी आगे बढ़ाने का प्रयास कर सकता है।

वह ज्ञान को रोककर रखने के बजाय उसे साझा करना चाहता है।

धनु राशि की छाया प्रवृत्ति:

जब गुरु का विस्तार असंतुलित हो जाता है तो अतिशयोक्ति, अति-आस्थावाद, overconfidence और अपनी विचारधारा को अंतिम सत्य मानने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो सकती है।

धनु की स्पष्टवादिता कभी-कभी कठोर शब्दों में बदल सकती है।

धनु का उच्चतम विकास तब होता है जब सत्य के साथ करुणा और ज्ञान के साथ विनम्रता जुड़ती है।

धनु राशि और करियर:

धनु राशि शिक्षा, अध्यापन, कानून, न्याय, दर्शन, धर्मशास्त्र, आध्यात्मिक शिक्षा, सलाहकारी कार्य, उच्च शिक्षा, शोध, लेखन, प्रकाशन, यात्रा, पर्यटन, अंतरराष्ट्रीय कार्य, नीति और मार्गदर्शन जैसे क्षेत्रों से संबंधित हो सकती है।

Teaching, mentoring, consulting और advisory functions में धनु की गुरु-ऊर्जा विशेष रूप से अभिव्यक्त हो सकती है।

लेकिन निश्चित profession का निर्णय केवल धनु राशि से नहीं किया जा सकता। इसके लिए दशम भाव, दशमेश, सूर्य, शनि, ग्रहयोग, दशा और संपूर्ण कुंडली का अध्ययन आवश्यक है।

धनु राशि और धन:

गुरु विस्तार, समृद्धि और वृद्धि



का कारक है। इसलिए धनु का संबंध prosperity और expansion से भी बनाया जाता है।

धनु व्यक्ति के लिए ज्ञान स्वयं एक asset बन सकता है।

शिक्षा, consulting, teaching, law, publishing, advisory work, international connections और knowledge-based professions धनु की ऊर्जा को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

लेकिन वास्तविक धन योग के लिए द्वितीय भाव, एकादश भाव, उनके स्वामी, गुरु, शुक्र और संबंधित दशाओं का विचार आवश्यक है।

धनु राशि और संबंध:

धनु संबंधों में मानसिक

स्वतंत्रता और वैचारिक सामंजस्य को महत्व दे सकता है।

उसके लिए केवल emotional attachment ही पर्याप्त नहीं हो सकता; shared philosophy, mutual growth और एक-दूसरे को स्वतंत्रता देना भी महत्वपूर्ण हो सकता है।

धनु के लिए संबंध का एक सुंदर सूत्र है :

Freedom with responsibility.

धनु राशि और विवाह:

धनु को अकेले देखकर विवाह का निर्णय नहीं किया जा सकता।

विवाह के लिए सप्तम भाव, सप्तमेश, शुक्र, गुरु, नवांश, उपपद, दाराकारक और संबंधित दशाओं का अध्ययन आवश्यक है।

लेकिन यदि धनु का प्रभाव विवाह क्षेत्र पर हो तो जीवनसाथी के साथ ज्ञान, यात्रा, स्वतंत्रता, विश्वास और समान जीवन-दर्शन का महत्व बढ़ सकता है।

धनु राशि और आध्यात्मिकता:

धनु राशि का उच्चतम रूप spiritual seeker है।

धनु पूछता है : सत्य क्या है ?

धर्म क्या है ?

जीवन का उद्देश्य क्या है ?

गुरु कोन है ?

ज्ञान की जीवन में कैसे उतारा जाए ?

इसलिए धनु का आध्यात्मिक मार्ग गुरु, शास्त्र, तीर्थ, साधना, दर्शन और अनुभव से विकसित हो सकता है।

धनु राशि और गुरु-शिष्य परंपरा:

धनु के मूल में गुरु-तत्व है।

गुरु केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाती है।

इसलिए धनु के लिए सही गुरु और सही ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

धनु का वास्तविक विकास तब होता है जब श्रद्धा के साथ विवेक जुड़ता है।

धनु राशि के नक्षत्र:

धनु राशि में तीन नक्षत्रों के क्षेत्र आते हैं :

मूल नक्षत्र के चारों चरण।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के चारों चरण।

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का प्रथम चरण।

अर्धधनु राशि में कुल नौ नक्षत्र पाए जाते हैं।

मूल नक्षत्र और धनु:

मूल का अर्थ जड़ या root है।

इसलिए मूल नक्षत्र किसी विषय की जड़ तक जाने और मूल कारण खोजने की प्रवृत्ति से जुड़ा है।

धनु की दर्शनात्मक प्रकृति के साथ यह बहुत सुंदर रूप से जुड़ता

है।

धनु केवल परिणाम नहीं देखा, वह जानना चाहता है कि उसके पीछे मूल कारण क्या है।

पूर्वाषाढ़ा और धनु:

पूर्वाषाढ़ा विजय, उत्साह, शक्ति और अपने उद्देश्य को स्थापित करने की इच्छा से जुड़ा है।

धनु की अग्नि के साथ यह व्यक्ति में प्रेरणा, आत्मविश्वास और लक्ष्य के प्रति दृढ़ता दे सकता है।

इसके shadow रूप में अपनी मान्यता को हर स्थिति में सही सिद्ध करने की प्रवृत्ति भी हो सकती है।

उत्तराषाढ़ा का प्रथम चरण और धनु:

उत्तराषाढ़ा स्थायी विजय, जिम्मेदारी, दृढ़ता और लंबे समय तक टिकने वाले परिणामों से संबंधित है।

धनु में इसका प्रथम चरण ज्ञान को practical responsibility में बदलने की दिशा देता है।

यहां केवल ज्ञान नहीं, बल्कि ज्ञान का वास्तविक उपयोग महत्वपूर्ण हो जाता है।

धनु राशि और अन्य अग्नि राशियों:

मेघ, सिंह और धनु तीनों अग्नि तत्व की राशियां हैं, लेकिन तीनों की अग्नि अलग है।

मेघ की अग्नि आरंभ करती है।

सिंह की अग्नि प्रकाशित करती है।

धनु की अग्नि दिशा देती है।

इसलिए धनु को उद्देश्यपूर्ण अग्नि कहा जा सकता है।

धनु और मिथुन अक्ष:

धनु और मिथुन एक-दूसरे के सामने स्थित राशियां हैं।

मिथुन information एकत्र करता है।

धनु उस information से wisdom और philosophy बनाता चाहता है।

मिथुन पूछता है : “क्या ?”

धनु पूछता है : “क्यों ?”

इसलिए यह अक्ष information और wisdom, facts और philosophy तथा curiosity और belief के बीच संबंध को दर्शाता है।

धनु और मीन : गुरु की दो राश

आस्था और 36 बिरादरी के भाईचारे का केंद्र बनेगा चौबीसा धाम : डॉ. अरविंद शर्मा

बादली में दादा सारंग देव चौबीसा धाम में हवन, भूमि पूजन एवं विशाल भंडारे का आयोजन धर्मपत्नी डॉ. रीटा शर्मा के साथ पहुंचे कैबिनेट मंत्री, बोले—नई पीढ़ी को संस्कृति और संस्कारों से जोड़ेगा धाम धाम के निर्माण के लिए अपने कोटे से 51 लाख रुपये देने की घोषणा, चौबीसा के गांवों से बड़ी संख्या में पहुंचे लोग

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 20 सितंबर। कैबिनेट मंत्री डॉ. अरविंद शर्मा ने कहा कि दादा सारंग देव चौबीसा धाम क्षेत्र की आस्था के साथ सामाजिक एकता और 36 बिरादरी के भाईचारे का प्रमुख केंद्र है। धाम का नवनिर्माण इस विरासत को और मजबूती देगा तथा नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति, परंपराओं और संस्कारों से जोड़ने का माध्यम बनेगा। रविवार को बादली स्थित दादा सारंग देव चौबीसा धाम में आयोजित हवन, भूमि पूजन एवं विशाल भंडारे में धर्मपत्नी डॉ. रीटा शर्मा के साथ पहुंचे कैबिनेट मंत्री ने दादा सारंग देव के चरणों में शीश नवाया। उन्होंने चौबीसा के सभी गांवों और पूरे क्षेत्र की सुख-समृद्धि, खुशहाली तथा आपसी भाईचारे की कामना की।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. अरविंद शर्मा ने धाम के निर्माण में सहयोग के लिए अपने कोटे से 51 लाख रुपये देने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि धार्मिक और सामाजिक स्थलों के विकास में सरकार के साथ समाज की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। सामूहिक प्रयासों से ही ऐसे केंद्रों को आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर स्वरूप दिया जा सकता है।

36 बिरादरी का भाईचारा हमारी पुरानी परंपरा

डॉ. शर्मा ने कहा कि हरियाणा की सबसे बड़ी ताकत उसका सामाजिक भाईचारा है। बादली की धरती पर चौबीसा के गांवों से बुजुर्गों, माताओं-बहनों और युवाओं का



एक साथ जुटना इसी परंपरा को दर्शाता है। 36 बिरादरी का आपसी सहयोग और एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े होने की भावना समाज को मजबूत बनाती है। उन्होंने कहा कि दादा सारंग देव चौबीसा धाम जैसे धार्मिक स्थल केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं हैं। ये समाज को एक मंच पर लाते, पुरानी परंपराओं को संरक्षित करने और नई पीढ़ी तक संस्कार पहुंचाने का काम भी करते हैं।

नवनिर्माण से धाम को मिलेगा नया स्वरूप

धाम परिसर में वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच हवन और भूमि पूजन किया गया।

कार्यक्रम में चौबीसा के गांवों सहित आसपास के क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोगों ने भागीदारी की। इसके बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। कैबिनेट मंत्री ने धाम के नवनिर्माण के लिए आगे आए ग्रामीणों, सेवादाओं और आयोजन समिति के सदस्यों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि जन सहयोग से आगे बढ़ने वाले धार्मिक और सामाजिक कार्य समाज में एकजुटता की भावना को और मजबूत करते हैं। डॉ. शर्मा ने दादा सारंग देव से बादली, चौबीसा के सभी गांवों और पूरे क्षेत्र में सुख-शांति एवं समृद्धि की कामना की।

सेवा मेरा योगदान थीम पर आयोजित हो रही हैं खेल गतिविधियां : डीएसओ



सेवा संकल्प अभियान के तहत गांव डीघल और बरहाणा में हैंडबॉल प्रतियोगिताएं आयोजित

बेरी (झज्जर), 20 सितंबर। जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न मांड्यूल के अनुरूप गतिविधियां निरन्तर जारी हैं। इसी कड़ी में उपमंडल बेरी के गांव डीघल और बरहाणा में हैंडबॉल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में क्षेत्र के खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इन आयोजनों का उद्देश्य युवाओं को खेलों से जोड़ने के साथ-साथ उनमें अनुशासन, टीम भावना और स्वस्थ जीवनशैली की भावना को बढ़ावा देना रहा।

प्रतियोगिता का शुभारंभ कोच देवेंद्र अहलावत ने किया। उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया और खेल भावना के साथ बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर कोच देवेंद्र अहलावत ने कहा कि खेल युवाओं के शारीरिक एवं



मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नियमित रूप से खेल गतिविधियों में भाग लेने से युवाओं में अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना विकसित होती है। उन्होंने खिलाड़ियों को निरंतर अभ्यास करने तथा खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वहीं गांव बरहाणा में आयोजित प्रतियोगिता का शुभारंभ गांव के ही सरपंच ने किया और खिलाड़ियों की हौसला अफजाई करते हुए उन्हें खेलों में निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

डीएसओ सतेंद्र सिंह ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा मेरा योगदान थीम पर जनभागीदारी को बढ़ावा देने वाली विभिन्न गतिविधियों का

आयोजन लगातार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि गांव डीघल में आयोजित लड़कियों की हैंडबॉल प्रतियोगिता में गांव डीघल की टीम ने प्रथम स्थान, गांव डीघल स्टेडियम की टीम ने द्वितीय तथा गांव गांगटान की टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसी कड़ी में गांव बरहाणा में आयोजित लड़कों की हैंडबॉल प्रतियोगिता में गांव डीघल की टीम ने प्रथम स्थान, गांव बरहाणा की टीम ने द्वितीय तथा गांव धांधलान की टीम ने तृतीय स्थान हासिल किया। सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित इन खेल प्रतियोगिताओं में युवाओं की भागीदारी ने खेलों के प्रति उनके उत्साह को प्रदर्शित किया।

जन समस्याओं के समाधान के लिए झज्जर में जिला स्तरीय समाधान शिविर आज

उपमंडल स्तर पर बेरी, बहादुरगढ़ और बादली लघु सचिवालयों में सुबह 10 से 12 बजे तक आयोजित होंगे शिविर

झज्जर, 20 सितंबर। आमजन की समस्याओं के त्वरित, पारदर्शी एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा सोमवार 21 सितंबर को जिला मुख्यालय सहित सभी उपमंडलों में समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। ये शिविर सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक लगाए जाएंगे, जहां नागरिकों की शिकायतें सुनकर उनका मौके पर ही निपटान सुनिश्चित किया जाएगा।

जिला स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन लघु सचिवालय स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में डीसी वर्षा खांगवाल की अध्यक्षता में होगा। इस दौरान डीसी विभिन्न विभागों से संबंधित शिकायतें सुनते हुए अधिकारियों को समस्याओं के समयबद्ध समाधान के निर्देश देंगे।

तीनों सब डिवीजन में भी लगेगे समाधान शिविर

उपमंडल स्तर पर बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बादली में एसडीएम विशाल कुमार और बेरी लघु सचिवालय परिसर में एसडीएम रेणुका नांदल की अध्यक्षता में उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में प्राप्त शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटान किया जाएगा।

गांव और शहर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी :डीसी



सेवा संकल्प अभियान के तहत 'सेवा मेरा योगदान' मांड्यूल में चला मेगा स्वच्छता अभियान जिलाभर के गांवों सहित झज्जर, बहादुरगढ़ व बेरी के शहरी क्षेत्रों में चिन्हित स्वच्छता स्थलों की हुई सफाई स्वच्छता अभियान में ग्रामीणों ने लिया हिस्सा, नागरिकों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए किया जागरूक

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 20 सितंबर। जिला झज्जर में 17 अक्टूबर तक चलाए जा रहे सेवा संकल्प अभियान के तहत 'सेवा मेरा योगदान' मांड्यूल के अंतर्गत रविवार को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में व्यापक स्वच्छता अभियान चलाया गया। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में जिले के सभी गांवों सहित झज्जर, बहादुरगढ़ और बेरी के शहरी क्षेत्रों में विभिन्न स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं। ग्रामीण क्षेत्रों में चिन्हित स्वच्छता स्थलों तथा कचरा संवेदनशील स्थानों की विशेष रूप

से साफ-सफाई कराई गई। सफाई टीमों ने इन स्थानों से कचरा हटाकर आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ बनाया। अभियान में हजारों ग्रामीणों ने सहभागिता करते हुए अपने घर, गली-मोहल्ले और सार्वजनिक स्थानों के आसपास स्वच्छता बनाए रखने का संकल्प लिया तथा अन्य लोगों को भी स्वच्छता के प्रति प्रेरित किया।

सेवा और जनभागीदारी की भावना से आगे बढ़ रहा अभियान : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि

जिला प्रशासन की ओर से अभियान के तहत आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ स्वच्छ वातावरण बनाए रखने में उनकी भूमिका के बारे में भी जानकारी दी जा रही है। स्वच्छता गतिविधियों के माध्यम से लोगों को यह संदेश दिया गया कि अपने घर के साथ-साथ गली, मोहल्ले, गांव और शहर को स्वच्छ रखना प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि 'सेवा मेरा योगदान' की भावना के साथ आयोजित स्वच्छता

गतिविधियों में जनभागीदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है। सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा, सहयोग और सहभागिता की भावना से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विभिन्न जनकल्याणकारी गतिविधियां निरंतर आयोजित की जा रही हैं।

शहरी क्षेत्रों में भी चिन्हित स्थानों की हुई सफाई

जिला नगर आयुक्त जगनवास ने बताया कि रविवार को झज्जर, बहादुरगढ़ और बेरी के शहरी क्षेत्रों में चिन्हित स्वच्छता लक्ष्य इकाइयों एवं कचरा संवेदनशील

स्थानों पर विशेष सफाई अभियान चलाया गया। सफाई कर्मचारियों एवं संबंधित टीमों ने इन स्थानों से कचरा हटाकर आसपास के क्षेत्रों की सफाई की। झज्जर नगर परिषद क्षेत्र में ईओ देवेंद्र कुमार तथा बहादुरगढ़ नगर परिषद क्षेत्र में ईओ संजय रोहिल्ला और बेरी नगर पालिका क्षेत्र में सचिव पवित्र गुलिया की देखरेख में स्वच्छता गतिविधियों के साथ नागरिकों को अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने के लिए जागरूक किया गया।

ग्रामीण क्षेत्रों में जनभागीदारी से

चला स्वच्छता अभियान : सीईओ

सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट ने कहा कि स्वच्छता केवल एक दिन का अभियान नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली सामूहिक जिम्मेदारी है। स्वच्छ गांव और स्वच्छ शहर स्वस्थ समाज की आधारशिला है। उन्होंने ग्रामीणों एवं नागरिकों से आह्वान किया कि वे कचरा इधर-उधर न डालें, निर्धारित स्थान पर ही कचरे का उचित निपटान करें और अपने आसपास के लोगों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करें।

सेवा संकल्प अभियान-कहानी बदलाव की : मेहनत को मिला सरकारी योजना का सहारा, हरकेश की बदली जिंदगी

छोटी सी फल-सब्जी की दुकान से शुरू हुआ सफर, आर्थिक सहायता से बढ़ा कारोबार और आमदनी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 20 सितंबर। बेरी खंड के गांव दुबलधन किरमान निवासी सीमित संसाधनों के बावजूद अपने परिवार को बेहतर जीवन देने का सपना देखने वाले हरकेश ने मेहनत को अपना सहारा बनाया और आज सरकारी योजना से मिली आर्थिक सहायता के बल पर अपने छोटे से कारोबार को आगे बढ़ाकर आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

500 रुपये की दैनिक आमदनी से शुरू हुआ सफर

हरकेश गांव में फल एवं सब्जियों की छोटी सी दुकान चलाते थे। दुकान पर पर्याप्त सामान उपलब्ध न होने के कारण कारोबार सीमित था और उनकी दैनिक आमदनी करीब 500 रुपये ही थी। परिवार की जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ कारोबार को बढ़ाना उनके लिए चुनौती बना हुआ था। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी और अपनी दुकान को विस्तार देने का प्रयास जारी रखा।

सरकारी योजना बनी बदलाव की वजह

वर्ष 2025-26 में हरकेश को हरियाणा अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम, झज्जर द्वारा संचालित लघु ऋण वित्त योजना की जानकारी मिली। उन्होंने योजना के तहत आर्थिक सहायता प्राप्त की। यह सहायता उनके लिए कारोबार को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण अवसर साबित हुई।

बढ़ा सामान तो बढ़े ग्राहक, आमदनी भी हुई दोगुनी के करीब

आर्थिक सहायता मिलने के बाद हरकेश ने दुकान के लिए अधिक मात्रा में फल एवं सब्जियां खरीदनी शुरू कीं। दुकान पर विभिन्न प्रकार की ताजा और गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध होने लगी। इससे ग्राहकों की संख्या बढ़ी और कारोबार में भी लगातार सुधार आया। जहां पहले हरकेश की दैनिक आमदनी करीब 500 रुपये थी, वहीं अब यह बढ़कर लगभग 900 रुपये प्रतिदिन हो गई है। वर्तमान में उनकी मासिक आमदनी करीब 27 हजार रुपये तक पहुंच गई है।

परिवार के लिए बेहतर भविष्य की ओर बढ़े कदम

आज हरकेश अपने कारोबार को पहले से बेहतर तरीके से चला रहे हैं। बढ़ी हुई आमदनी से वे अपने परिवार की जरूरतों को अधिक अच्छे ढंग से पूरा कर पा रहे हैं। उनके लिए यह बदलाव केवल आमदनी बढ़ने तक सीमित नहीं

है, बल्कि इसने उनके अंदर आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना को भी मजबूत किया है। हरकेश की कहानी उन लोगों के लिए प्रेरणा है, जो सीमित संसाधनों के कारण अपने छोटे कारोबार को आगे नहीं बढ़ा पाते। सरकारी योजनाओं का लाभ, मेहनत और सही दिशा मिलकर किस तरह किसी व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं, हरकेश की सफलता इसकी मिसाल है।

सरकारी योजनाएं बन रही हैं आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि सरकार का उद्देश्य पात्र एवं जरूरतमंद लोगों को कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। स्वरोजगार और छोटे कारोबार के लिए मिलने वाली आर्थिक सहायता लोगों को अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर देती है। उन्होंने कहा कि हरकेश जैसे लाभार्थियों की योजनाओं की सड़ बात का प्रमाण है कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही व्यक्ति तक पहुंचने पर उसके जीवन में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने पात्र नागरिकों से आह्वान किया कि वे अपने क्षेत्र में संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करें और पात्रता के अनुसार उनका लाभ उठाकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ें।

मतदाता सूची को विश्वसनीय व अपडेट बनाने में नागरिकों की सक्रिय सहभागिता जरूरी : डीसी

निर्वाचन आयोग ने दिया मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने और सुधार का अंतिम अवसर एसआईआर-2026 अभियान के तहत 30 सितंबर तक दर्ज कराएं दावे- आपत्तियां

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 20 सितंबर। डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि मतदाता सूची को शुद्ध, विश्वसनीय एवं अपडेट बनाने में नागरिकों की सक्रिय सहभागिता बेहद जरूरी है। स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं पारदर्शी निर्वाचन प्रक्रिया के लिए प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज होना आवश्यक है।

उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला झज्जर के चारों विधानसभा क्षेत्रों में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर)-2026 अभियान के तहत मतदाता सूची को शुद्ध एवं अद्यतन बनाने का कार्य जारी है।

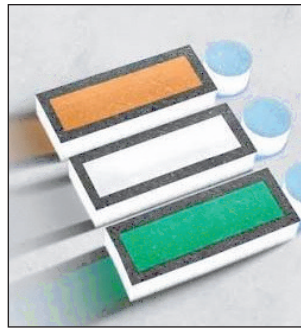
उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अभियान के दौरान प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज हो तथा अपात्र नामों को हटाने और आवश्यक संशोधनों की प्रक्रिया निर्धारित समय सीमा में पूरी की जाए। डीसी ने पात्र नागरिकों से अपील की कि वे अपना तथा परिवार के सभी



पात्र सदस्यों का नाम और विवरण प्रारंभिक मतदाता सूची में समय रहते जांच लें। उन्होंने कहा कि जिन पात्र नागरिकों का नाम प्रारंभिक मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, वे निर्धारित दस्तावेजों एवं घोषणा-पत्र के साथ फॉर्म-6 के माध्यम से नाम शामिल करवाने के लिए दावा प्रस्तुत कर सकते हैं। पात्र युवाओं से विशेष आग्रह किया गया कि वे मतदाता बनने के लिए फॉर्म-6 भरकर आवेदन करें और 30 सितंबर की अंतिम तिथि का इंतजार न करें।

वोटर हर हाल में 30 सितंबर तक दर्ज कराएं दावे-आपत्तियां

डीसी ने बताया कि एसआईआर-2026 के संशोधित कार्यक्रम के अनुसार मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां 30 सितंबर तक दर्ज कराई जा सकती हैं। प्राप्त दावे-आपत्तियों का निपटारा 28 अक्टूबर



तक किया जाएगा, जबकि अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 6 नवंबर को होगा। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर अपने दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराएं। मतदाता सूची में नाम, पता, आयु, फोटो अथवा अन्य विवरण की जांच कर लें और किसी भी प्रकार की त्रुटि पाए जाने पर समय रहते आवश्यक संशोधन के लिए आवेदन करें।

मतदाता फॉर्म-7 और फॉर्म-8 से कराएं आवश्यक सुधार

डीसी ने बताया कि मतदाता सूची में नाम, पता, आयु, फोटो अथवा अन्य विवरण में त्रुटि होने पर फॉर्म-8 के माध्यम से संशोधन के लिए आवेदन किया जा सकता है। वहीं, मृत, अपात्र, स्थायी रूप से स्थानांतरित अथवा अन्य स्थान पर पहले से पंजीकृत मतदाता के नाम के संबंध में फॉर्म-7 के माध्यम से आपत्ति दर्ज कराई जा सकती है।

उन्होंने कहा कि नागरिकों को अपने आवेदन के साथ आवश्यक दस्तावेज निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार प्रस्तुत करने चाहिए, ताकि दावे-आपत्तियों का निपटान नियमानुसार किया जा सके।

बीएलओ, ईआरओ और एईआरओ से प्राप्त करें सहायता

जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने कहा कि नागरिक दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराने अथवा आवेदन प्रक्रिया की जानकारी के लिए अपने क्षेत्र के बृथ लेवल अधिकारी (बीएलओ), निर्वाचक पंजीयन अधिकारी (ईआरओ) अथवा सहायक निर्वाचक पंजीयन अधिकारी (ईआईआरओ) से संपर्क कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन की सुविधा भी उपलब्ध है। मतदाता सूची से संबंधित सहायता के लिए मतदाता हेल्पलाइन नंबर 1950 पर संपर्क किया जा सकता है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि अभियान के दौरान नागरिकों को आवेदन प्रक्रिया की जानकारी उपलब्ध करवाने के साथ-साथ दावे-आपत्तियों के समयबद्ध निपटान पर विशेष ध्यान दिया जाए।

डीसी वर्षा खांगवाल ने सभी पात्र नागरिकों से अपील की कि वे एसआईआर-2026 अभियान के तहत निर्धारित समय सीमा में आवश्यक कार्रवाई पूरी करें।

भक्ति में लीन दिखीं भाजपा नेत्री पिकी कुंडू: किया श्री गणेश पूजन, बोलीं - विघ्नहर्ता से राष्ट्र कल्याण और नारी सशक्तिकरण की प्रार्थना की

सामाजिक परामर्शदाता, बंगाली प्रकोष्ठ की सह-संयोजक, टोलवा ट्रस्ट की राष्ट्रीय महासचिव और भाजपा दिल्ली के कई प्रकोष्ठों की गणमान्य सदस्य ने भक्तिपूर्ण भाव से किया पूजन, कार्यकर्ताओं में दिखा उत्साह



रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

राजनीति के साथ-साथ अध्यात्म में भी सक्रिय भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश की जानी-मानी सामाजिक कार्यकर्ता और नेत्री पिकी कुंडू ने आज भक्तिपूर्ण भाव से भगवान श्री गणेश का पूजन-अर्चन किया।

पिकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता, सह-संयोजक बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली, राष्ट्रीय महासचिव टोलवा ट्रस्ट, एवं भाजपा

दिल्ली प्रदेश के कई प्रकोष्ठों की गणमान्य सदस्य के साथ-साथ पीएम उज्ज्वला योजना दिल्ली प्रदेश की सदस्य भी हैं।

उनके इस पूजन ने सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भक्ति और सेवा के संगम का सुंदर संदेश दिया।

मामला बिंदुवार - कौन हैं पिकी कुंडू और क्यों हैं यह पूजन खास ?

बिंदु 1: पिकी कुंडू का परिचय

- एक साथ कई जिम्मेदारियां

- सामाजिक परामर्शदाता:

समाज में पारिवारिक और सामाजिक मुद्दों पर परामर्श देने वाली प्रमुख कार्यकर्ता।

- भाजपा दिल्ली बंगाली प्रकोष्ठ की सह-संयोजक: दिल्ली में रहने वाले लाखों बंगाली समाज की आवाज को पार्टी तक पहुंचाने की जिम्मेदारी।

- राष्ट्रीय महासचिव, टोलवा ट्रस्ट: शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय राष्ट्रीय संगठन की प्रमुख पदाधिकारी।

- पीएम उज्ज्वला योजना,

दिल्ली प्रदेश सदस्य: प्रधानमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना के तहत गरीब महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाने के अभियान से सीधे जुड़ी हुई।

- भाजपा दिल्ली के कई प्रकोष्ठों की गणमान्य सदस्य: पार्टी के विभिन्न मोर्चों पर सक्रिय भूमिका।

बिंदु 2: पूजन का भाव - क्या प्रार्थना की ?

- सूत्रों के अनुसार पिकी कुंडू ने पूर्ण विधि-विधान से श्री गणेश पूजन किया।

- उन्होंने विघ्नहर्ता भगवान

गणेश से राष्ट्र कल्याण, दिल्ली की सुख-समृद्धि, नारी सशक्तिकरण और समाज में एकता की प्रार्थना की।

- उनका कहना है - "गणेश जी बुद्धि, विवेक और शूभारंभ के देवता हैं। पीएम उज्ज्वला योजना के माध्यम से हम हर घर में स्वच्छ ऊर्जा और खुशहाली लाने का जो संकल्प ले रहे हैं, उसमें उनका आशीर्वाद जरूरी है।"

बिंदु 3: राजनीतिक और सामाजिक संदेश

- यह पूजन सिर्फ व्यक्तिगत

आस्था नहीं, बल्कि एक सामाजिक संदेश भी है।

- भाजपा की एक महिला नेत्री द्वारा इस तरह भक्तिपूर्ण आयोजन करना यह दर्शाता है कि पार्टी के कार्यकर्ता 'सेवा ही संगठन' के साथ-साथ 'संस्कृति ही संस्कार' को भी लेकर चलते हैं।

- बंगाली प्रकोष्ठ की सह-संयोजक होने के नाते उनका यह पूजन दिल्ली के बंगाली समाज में भी उत्साह का विषय बना हुआ है, क्योंकि बंगाल में गणेश पूजन के

साथ-साथ दुर्गा पूजा की तैयारियां भी शुरू हो चुकी हैं।

बिंदु 4: उपस्थिति और माहौल

- पूजन के दौरान भक्तिमय माहौल रहा, भजन-कीर्तन और मंत्रोच्चार के साथ वातावरण पवित्र हो गया।

- इस अवसर पर स्थानीय भाजपा कार्यकर्ता और महिला मोर्चा की सदस्य भी उपस्थित रहीं और सभी ने एक-दूसरे को गणेश उत्सव की शुभकामनाएं दीं।

संपादकीय टिप्पणी - जब सेवा में भक्ति जुड़ती है पिकी कुंडू जैसी नेत्री जो एक साथ सामाजिक परामर्शदाता, ट्रस्ट की राष्ट्रीय महासचिव और उज्ज्वला जैसी जनकल्याणकारी योजना की सदस्य हैं, उनका गणेश पूजन करना यह बताता है कि जनसेवा की ऊर्जा आस्था से ही आती है।

आज जब राजनीति पर अक्सर सवाल उठते हैं, तब ऐसे भक्तिपूर्ण आयोजन जनता और नेता के बीच एक आत्मीय संबंध बनाते हैं।

देशी महुआ मदिरा निर्माण केंद्र रायपुरा (बिरमित्रपुर) के लाइसेंस में गंभीर अनियमितताओं के आरोप, बंदी आदेश के बावजूद संचालन पर उठे सवाल

प्रदूषण अनापत्ति से लेकर वैध अनुबंध और बैंक गारंटी तक पर सवाल, जिम्मेदार विभागों सह सतर्कता टीम की भूमिका भी जांच के घेरे में निर्धारित सीमा से बाहर मदिरा बिक्री और नियमों की कथित अनदेखी का आरोप; किसी अप्रिय घटना की स्थिति में जवाबदेही तय करने की मांग

डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक सुंदरगढ़

जिले में संचालित देशी महुआ मदिरा निर्माण केंद्र के लाइसेंस और संचालन प्रक्रिया को लेकर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। उपलब्ध दस्तावेजों एवं स्थानीय स्तर पर सामने आ रही जानकारी के आधार पर आरोप है कि कुछ भूतों के पास प्रदूषण अनापत्ति प्रमाणपत्र, वैध अनुबंध तथा निर्धारित प्रारूप में आवश्यक दस्तावेज तक उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि आवश्यक दस्तावेजों के अभाव के बावजूद लाइसेंस का विस्तार या नवीनीकरण किस आधार पर किया गया।

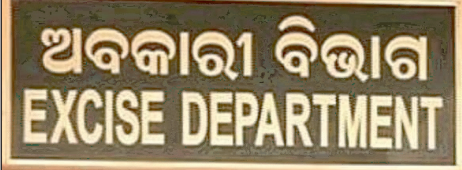
मामले को लेकर सबसे गंभीर सवाल यह है कि जिलाधिकारी द्वारा इसे बंद करने के निर्देश दिए जाने के बावजूद कथित रूप से संचालन जारी रहने की शिकायत सामने आ रही है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि उत्पादन प्रक्रिया में निर्धारित नियमों की अनदेखी की जा रही है तथा निर्धारित क्षेत्राधिकार से बाहर भी मदिरा की बिक्री किए जाने की आशंका है।

इसके अलावा भूदे के संचालन में अग्नि सुरक्षा, पर्यावरणीय मानकों और अन्य वैधानिक प्रावधानों के पालन को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। स्थानीय स्तर पर यह आरोप भी सामने आया है कि लाइसेंस प्रक्रिया में जमा की जाने वाली बैंक गारंटी के दस्तावेजों में भी संभावित त्रुटियां हैं। हालांकि इन आरोपों की आधिकारिक पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी।

कई विभागों की भूमिका पर उठ रहे सवाल

स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि बंदी आदेश के बावजूद संचालन जारी है, तो आबकारी विभाग, प्रदूषण नियंत्रण विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय, तहसील प्रशासन, सतर्कता टीम तथा अन्य संबंधित अधिकारियों की भूमिका की भी जांच होनी चाहिए।

लोगों ने मांग की है कि पूरे मामले की उच्चस्तरीय एवं निष्पक्ष जांच कर लाइसेंस जारी करने से लेकर विस्तार, अनुबंध, बैंक गारंटी, प्रदूषण संबंधी अनुमति और संचालन तक की पूरी प्रक्रिया की समीक्षा की जाए। साथ ही यदि किसी स्तर पर नियमों का उल्लंघन पाया जाता है तो जिम्मेदारी तय कर कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में किसी दुर्घटना की स्थिति में जवाबदेही को लेकर कोई अस्पष्टता न रहे।



कांसबहाल रेलवे स्टेशन के समीप गणपति बप्पा को दी भावभीनी विदाई

गणेश प्रतिमा विसर्जन के अवसर पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, स्थानीय लोगों ने लिया भोग का प्रसाद

पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ गणपति बप्पा की पूजा-अर्चना कर की गई पूर्णाहुति, नम आंखों से विसर्जन के लिए रवाना हुई प्रतिमा

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक कांशबाहाल

कांशबाहाल रेलवे स्टेशन के समीप स्थित गणेश पूजा पंडाल में गणेश प्रतिमा विसर्जन के अवसर पर श्रद्धा और भक्ति का वातावरण देखने को मिला। स्थानीय निवासियों ने पारंपरिक रीति-रिवाजों और धार्मिक विधि-विधान के साथ गणपति बप्पा की पूजा-अर्चना कर उन्हें भावभीनी विदाई दी।

विसर्जन से पूर्व पूजा पंडाल में विशेष पूजा-अर्चना एवं आरती का आयोजन किया गया। इसके बाद विधिवत पूजा की पूर्णाहुति की गई। बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालु कार्यक्रम में शामिल हुए और



गणपति बप्पा के जयकारों से पूरा परिसर भक्तिमय हो उठा।

इस अवसर पर श्रद्धालुओं के लिए भोग-प्रसाद की भी व्यवस्था की गई थी। स्थानीय निवासियों ने सामूहिक रूप से भोग ग्रहण किया और एक-दूसरे को गणेश उत्सव की शुभकामनाएं दीं। भरत विश्वकर्मा, सुकांत त्रिपाठी, देब पाढ़ी, मुनिन्द्र सिंह, शशिकांत

त्रिपाठी, मेवा साहू, ब्रजकिशोर नायक एवं धीरेन्द्र सेठी सहित अन्य उपस्थित थे।

इसके बाद श्रद्धालुओं ने परंपरागत तरीके से गणपति बप्पा की प्रतिमा को विसर्जन के लिए तैयार किया। ढोल-नगाड़ों और 'गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ' के जयघोष के बीच प्रतिमा को श्रद्धापूर्वक विसर्जन

स्थल की ओर रवाना किया गया।

पूरे आयोजन के दौरान स्थानीय लोगों की भागीदारी और आपसी सहयोग देखने को मिला। श्रद्धालुओं ने भगवान गणेश से क्षेत्र में सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना की तथा अगले वर्ष पुनः गणपति बप्पा के आगमन की प्रार्थना के साथ उत्सव का समापन किया।

सुंदरगढ़ में एसएच-24 के 16 किलोमीटर हिस्से के सुदृढ़ीकरण के लिए 22.54 करोड़ रुपये की मंजूरी का प्रस्ताव करमडीही-लुलकीडीही-तलसरा मार्ग के कायाकल्प की कवायद तेज, बदहाल सड़क पर जल्द काम शुरू होने की उम्मीद

सरकार की मंजूरी के लिए भेजा गया है।

केओडर स्थित सड़क एवं भवन निर्माण मंडल के मुख्य निर्माण अभियंता ने शुक्रवार को सड़क एवं भवन निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता (सड़क-1), भुवनेश्वर को पत्र भेजकर इस परियोजना के लिए प्रशासनिक स्वीकृति तथा सक्षम प्राधिकारी से आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराने का अनुरोध किया है।

यह पहल उपाध्यक्ष एवं तलसरा विधायक भवानी शंकर भोई द्वारा सड़क की बदहाल स्थिति की ओर मुख्य निर्माण अभियंता का ध्यान आकर्षित किए जाने के एक दिन बाद सामने आई। विधायक ने बताया था कि लगभग 16 किलोमीटर लंबे इस मार्ग पर जगह-जगह बड़े गड्ढे बन गए हैं, जिससे यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ गया है।

परियोजना लागत में कई मद शामिल

विभाग द्वारा तैयार अनुमानित लागत में

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी), गुणवत्ता नियंत्रण, आकस्मिक व्यय, सड़क किनारे पौधरोपण तथा रखरखाव सहित अन्य आवश्यक खर्च शामिल किए गए हैं।

राज्य राजमार्ग-24 दोहरी लेन का महत्वपूर्ण मार्ग है, जो बौध, रायराखोल, देवाढ़ और कुचिंडा क्षेत्रों को जोड़ता है तथा सुंदरगढ़ जिले के तलसरा विधानसभा क्षेत्र से होकर छत्तीसगढ़ की दिशा में आगे बढ़ता है। यह व्यस्त मार्ग सुबडेगा और बालिशंकरा प्रखंडों की बड़ी ग्रामीण आबादी के लिए आवागमन का महत्वपूर्ण साधन है। इस मार्ग से बड़ी संख्या में यात्री और मालवाहक वाहन गुजरते हैं। सीमावर्ती छत्तीसगढ़ के लोग भी आवागमन के लिए इस सड़क पर निर्भर हैं।

प्रशासनिक मंजूरी और धनराशि मिलने के बाद सड़क सुदृढ़ीकरण का कार्य शुरू होने की उम्मीद है। स्थानीय लोगों को उम्मीद है कि परियोजना पूरी होने से आवागमन सुगम होने के साथ सड़क सुरक्षा में भी सुधार आएगा।

सुंदरगढ़ जिले में राज्य राजमार्ग संख्या-24 के बदहाल 16 किलोमीटर लंबे हिस्से के सुदृढ़ीकरण की दिशा में पहल तेज हो गई है। करमडीही-लुलकीडीही-तलसरा मार्ग के सुदृढ़ीकरण के लिए करीब 22.54 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत का प्रस्ताव राज्य

अगले साल होने वाले सिंहस्थ महाकुंभ मेले के बैकग्राउंड में, 31 अक्टूबर को होने वाले झंडा फहराने के कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मौजूद रहेंगी। यह प्रोग्राम नासिक और त्र्यंबकेश्वर दोनों जगहों पर दोपहर 12:02 बजे होगा। इस प्रोग्राम में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ-साथ केंद्रीय मंत्री और दूसरे नेता भी मौजूद रहेंगे। झंडा फहराने के कार्यक्रम की तैयारियों का रिव्यू करने के लिए नासिक-त्र्यंबकेश्वर कुंभ मेला आर्थरटी ऑफिस में एक रिव्यू मीटिंग हुई। इस मौके पर कुंभ मेला मंत्री गिरीश महाजन ने कहा कि झंडा फहराने के कार्यक्रम की तैयारियां बहुत अच्छी प्लानिंग से की जानी चाहिए। सभी संबंधित एजेंसियां को ऑर्डिनेशन से काम करें और काम में तेजी लाएं। उन्होंने निर्देश दिया कि तैयारियों में कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए। झंडा फहराने के कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और दूसरे गणमान्य लोगों को बुलाया जा रहा है। इसे देखते हुए, सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए जाने चाहिए। महाजन ने यह भी सुझाव दिया कि झंडा फहराने की रस्म के लिए ट्रांसपोर्ट व्यवस्था, पार्किंग, भीड़ कंट्रोल, सुरक्षा, स्वास्थ्य और सफाई के मामले में कड़ी प्लानिंग की जानी चाहिए। प्लानिंग में कोई कमी न रहे, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। मीटिंग के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए मंत्री गिरीश महाजन ने कहा कि 31 अक्टूबर को दोपहर 12:02 बजे नासिक शहर के रामकुंड और त्र्यंबकेश्वर के कुशावर्त में झंडा फहराया जाएगा। झंडा फहराने की रस्म राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू नासिक या त्र्यंबकेश्वर में करेंगी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और सुनेत्रा पवार एक ही जगह पर मौजूद रहेंगे। इस समारोह में केंद्र के नेता भी मौजूद रहेंगे। कहा गया कि इस बार भी झंडा फहराने की वैसे ही प्लानिंग की जाएगी, जैसी हर 12 साल में होती है। झंडा फहराने की रस्म के मौके पर कई तरह के कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है। कुंभ मेला कमिश्नर शेखर सिंह ने कार्यक्रम की प्लानिंग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रामकुंड, कुशावर्त और नील पर्वत इलाकों में कई धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसमें गोदावरी आरती, दिव्य संध्या, लाइटिंग, दीप प्रज्वलन, कुंभ गीत, शंखनाद आदि कार्यक्रमों के साथ ही वेबसाइट और कॉफी टेबल बुक के जरिए सिंहस्थ की जानकारी बड़े पैमाने पर फैलाई जाएगी।

31 अक्टूबर को होने वाले झंडा फहराने के कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मौजूद रहेंगी

सचिन मालतीताई त्र्यंबकराव मंडलिक परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक नासिक

अगले साल होने वाले सिंहस्थ महाकुंभ मेले के बैकग्राउंड में, 31 अक्टूबर को होने वाले झंडा फहराने के कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मौजूद रहेंगी। यह प्रोग्राम नासिक और त्र्यंबकेश्वर दोनों जगहों पर दोपहर 12:02 बजे होगा। इस प्रोग्राम में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के साथ-साथ केंद्रीय मंत्री और दूसरे नेता भी मौजूद रहेंगे। झंडा फहराने के कार्यक्रम की तैयारियों का रिव्यू करने के लिए नासिक-त्र्यंबकेश्वर कुंभ मेला आर्थरटी ऑफिस में एक रिव्यू मीटिंग हुई। इस मौके पर कुंभ मेला मंत्री गिरीश महाजन ने कहा कि झंडा फहराने के कार्यक्रम की तैयारियां बहुत अच्छी प्लानिंग से की जानी चाहिए। सभी संबंधित एजेंसियां को ऑर्डिनेशन से काम करें और काम में तेजी लाएं। उन्होंने निर्देश दिया कि तैयारियों में कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए। झंडा फहराने के कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और दूसरे गणमान्य लोगों को बुलाया जा रहा है। इसे देखते हुए, सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए जाने चाहिए। महाजन ने यह भी सुझाव दिया कि झंडा फहराने की रस्म के लिए ट्रांसपोर्ट व्यवस्था, पार्किंग, भीड़ कंट्रोल, सुरक्षा, स्वास्थ्य और सफाई के मामले में कड़ी प्लानिंग की जानी चाहिए। प्लानिंग में कोई कमी न रहे, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। मीटिंग के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए मंत्री गिरीश महाजन ने कहा कि 31 अक्टूबर को दोपहर 12:02 बजे नासिक शहर के रामकुंड और त्र्यंबकेश्वर के कुशावर्त में झंडा फहराया जाएगा। झंडा फहराने की रस्म राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू नासिक या त्र्यंबकेश्वर में करेंगी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और सुनेत्रा पवार एक ही जगह पर मौजूद रहेंगे। इस समारोह में केंद्र के नेता भी मौजूद रहेंगे। कहा गया कि इस बार भी झंडा फहराने की वैसे ही प्लानिंग की जाएगी, जैसी हर 12 साल में होती है। झंडा फहराने की रस्म के मौके पर कई तरह के कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव है। कुंभ मेला कमिश्नर शेखर सिंह ने कार्यक्रम की प्लानिंग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि रामकुंड, कुशावर्त और नील पर्वत इलाकों में कई धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इसमें गोदावरी आरती, दिव्य संध्या, लाइटिंग, दीप प्रज्वलन, कुंभ गीत, शंखनाद आदि कार्यक्रमों के साथ ही वेबसाइट और कॉफी टेबल बुक के जरिए सिंहस्थ की जानकारी बड़े पैमाने पर फैलाई जाएगी।

सुंदरगढ़ में एसएच-24 के 16 किलोमीटर हिस्से के सुदृढ़ीकरण के लिए 22.54 करोड़ रुपये की मंजूरी का प्रस्ताव करमडीही-लुलकीडीही-तलसरा मार्ग के कायाकल्प की कवायद तेज, बदहाल सड़क पर जल्द काम शुरू होने की उम्मीद



प्रकृति की कीमत पर विकास नहीं, मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्यकांत बोले - पर्यावरण न्याय का ‘बरगद’ है सुप्रीम कोर्ट

मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्य कांत ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संविधान में प्रावधान मौजूद हैं, लेकिन संविधान के शब्द केवल बीज की तरह हैं। इन्हें अंकुरित होने और जीवन पाने के लिए न्यायिक समझ के पोषण की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इसी भूमिका को निभाया है। उनके मुताबिक, शीर्ष अदालत पर्यावरण न्याय के ‘बरगद के पेड़’ की तरह मजबूती से खड़ी रही है, जिसकी जड़ें भारत के सभ्यतागत मूल्यों में गहरी हैं और जिसकी शाखाएं आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा करती हैं।



रिपोर्ट सह संपादक परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्य कांत ने सुप्रीम कोर्ट को पर्यावरण न्याय का 'बरगद का पेड़' बताते हुए कहा कि विकास और संरक्षण में टकराव नहीं, बल्कि संतुलन जरूरी है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार मौलिक अधिकार है और जलवायु परिवर्तन का असर समानता, आजीविका और स्वास्थ्य जैसे अधिकारों पर भी पड़ सकता है। पर्यावरण और पारिस्थितिकी की सुरक्षा में सुप्रीम कोर्ट की भूमिका का जिक्र करते हुए मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्यकांत ने शनिवार को शीर्ष अदालत को पर्यावरण न्याय का 'बरगद का पेड़' बताया। उन्होंने कहा कि संरक्षण और विकास एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना जरूरी है। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) की ओर से आयोजित 'पर्यावरण और जलवायु गतिशीलता का भविष्य'

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) ने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े संवैधानिक प्रावधानों और न्यायपालिका की भूमिका पर विस्तार से बात की। मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्य कांत ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संविधान में प्रावधान मौजूद हैं, लेकिन संविधान के शब्द केवल बीज की तरह हैं। इन्हें अंकुरित होने और जीवन पाने के लिए न्यायिक समझ के पोषण की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इसी भूमिका को निभाया है। उनके मुताबिक, शीर्ष अदालत पर्यावरण न्याय के 'बरगद के पेड़' की तरह मजबूती से खड़ी रही है, जिसकी जड़ें भारत के सभ्यतागत मूल्यों में गहरी हैं और जिसकी शाखाएं आने वाली पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा करती हैं। संरक्षण के बिना प्रगति मृगतृष्णा' मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) ने कहा कि दशकों से सुप्रीम कोर्ट इस विचार का समर्थन करता रहा है कि संरक्षण के बिना

प्रगति एक ऐसी मृगतृष्णा है, जो पारिस्थितिक विनाश के रेगिस्तान में गायब हो जाती है। उन्होंने कहा कि अदालत के फैसलों में इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रकृति की रक्षा करना केवल परंपरा का कार्य नहीं, बल्कि आत्म-संरक्षण है। यह जीवन की निरंतरता में किया जाने वाला निवेश है। अनुच्छेद 21 के तहत दूषण मुक्त पर्यावरण का अधिकार सुप्रीम कोर्ट के सक्रिय दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्यकांत ने कहा कि शीर्ष अदालत ने प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के अधिकार को अनुच्छेद 21 में सीधे शामिल करके इसे मौलिक अधिकार बनाया है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण से जुड़े न्यायिक दृष्टिकोण का यही क्रम आज तक आगे बढ़ा है और हाल में सुप्रीम कोर्ट ने 'पारिस्थितिकी-केंद्रित अनुपातिकता' की अवधारणा को स्पष्ट किया है। विकास की अनुमति, लेकिन शर्तों और जवाबदेही के साथ मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) ने कहा कि 'पारिस्थितिकी - केंद्रित अनुपातिकता' का अर्थ यह है कि

पर्यावरण संरक्षण मजबूत होना चाहिए, लेकिन इतना विवेकपूर्ण भी होना चाहिए कि वह दुनिया के मौजूदा स्वरूप के साथ तालमेल बैठा सके। उन्होंने कहा कि इस अवधारणा के तहत विकास की अनुमति देने का व्यावहारिक तरीका यह है कि उसके साथ तालूम करने योग्य शर्तें, विशेषज्ञों की निगरानी, बहाली, क्षतिपूर्क वनीकरण और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। जलवायु परिवर्तन से मौलिक अधिकार भी प्रभावित मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्यकांत ने कहा कि हालिया भारतीय जलवायु न्यायशास्त्र ने इस मुद्दे को संवैधानिक रूप से और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। उन्होंने कहा कि न्यायशास्त्र यह मानता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव समानता, आजीविका और स्वास्थ्य जैसे मौलिक अधिकारों को प्रभावित कर सकते हैं। इसके साथ ही यह उन आवश्यक परिस्थितियों को भी प्रभावित कर सकता है, जो इन अधिकारों का सार्थक रूप से आनंद लेने के लिए जरूरी हैं।

प्रगति एक ऐसी मृगतृष्णा है, जो पारिस्थितिक विनाश के रेगिस्तान में गायब हो जाती है। उन्होंने कहा कि अदालत के फैसलों में इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रकृति की रक्षा करना केवल परोपकार का कार्य नहीं, बल्कि आत्म-संरक्षण है। यह जीवन की निरंतरता में किया जाने वाला निवेश है। अनुच्छेद 21 के तहत प्रदूषण मुक्त पर्यावरण का अधिकार सुप्रीम कोर्ट के सक्रिय दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्यकांत ने कहा कि शीर्ष अदालत ने प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के अधिकार को अनुच्छेद 21 में सीधे शामिल करके इसे मौलिक अधिकार बनाया है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण से जुड़े न्यायिक दृष्टिकोण का यही क्रम आज तक आगे बढ़ा है और हाल में सुप्रीम कोर्ट ने ‘पारिस्थितिकी-केंद्रित आनुपातिकता’ की अवधारणा को स्पष्ट किया है। विकास को अनुमति, लेकिन शर्तों और जवाबदेही के साथ मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) ने कहा कि ‘पारिस्थितिकी - केंद्रित आनुपातिकता’ का अर्थ यह है कि

पर्यावरण संरक्षण मजबूत होना चाहिए, लेकिन इतना विवेकपूर्ण भी होना चाहिए कि वह दुनिया के मौजूदा स्वरूप के साथ तालमेल बैठा सके। उन्होंने कहा कि इस अवधारणा के तहत विकास की अनुमति देने का व्यावहारिक तरीका यह है कि उसके साथ लागू कर्मों के योग्य शर्तों, विशेषज्ञों की निगरानी, बहाली, क्षतिपूर्क वनीकरण और जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। जलवायु परिवर्तन से मौलिक अधिकार भी प्रभावित मुख्य न्यायाधीश भारत (सीजेआई) सूर्यकांत ने कहा कि हालिया भारतीय जलवायु न्यायशास्त्र ने इस मुद्दे को संवैधानिक रूप से और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। उन्होंने कहा कि न्यायशास्त्र यह मानता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव समानता, आजीविका और स्वास्थ्य जैसे मौलिक अधिकारों को प्रभावित कर सकते हैं। इसके साथ ही यह उन आवश्यक परिस्थितियों की भी प्रभावित कर सकता है, जो इन अधिकारों का सार्थक रूप से आनंद लेने के लिए जरूरी हैं।



किसान की दुविधा: अधिक फसल, कम लाभ



डॉ. विजय गर्ग परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

आधुनिक कृषि ने उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्नत बीज, सिंचाई, उर्वरक, मशीनरी और वैज्ञानिक खेती के तरीकों ने किसानों को एक ही भूमि से अधिक खाद्यान्न उत्पादन करने में सक्षम बनाया है। फिर भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है—क्या अधिक उत्पादन का अर्थ हमेशा अधिक कमाई होता है? कई किसानों के लिए इसका उत्तर आवश्यक रूप से हाँ नहीं है। अधिक उपज के साथ बीज, उर्वरक, कीटनाशक, बिजली, डीजल, मशीनरी, श्रम और सिंचाई की लागत भी बढ़ सकती है। जब बाजार में फसल का मूल्य खेती की बढ़ती लागत के अनुपात में नहीं बढ़ता, तो किसान अधिक फसल पैदा करने के बावजूद अतिरिक्त आय से वंचित रह सकता है। यह एक जटिल विरोधाभास पैदा करता है। कृषि की सफलता को अक्सर पैदा की गई फसल की मात्रा से मापा जाता है, जबकि किसान की आर्थिक खुशहाली इस बात पर निर्भर करती है कि खेती की सभी लागतें निकालने के बाद उसके पास कितनी आय बचती है। इसलिए बंजर फसल राष्ट्रीय स्तर पर सफलता जैसी दिखाई दे सकती है, लेकिन जरूरी नहीं कि इससे व्यक्तिगत किसान की समृद्धि भी बढ़े। बाजार की अनिश्चितता स्थिति

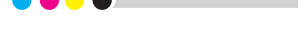
को और जटिल बनाती है। जब उत्पादन अधिक होता है और आपूर्ति मांग से अधिक हो जाती है, तो कीमतें गिर सकती हैं। पर्याप्त भंडारण और विपणन सुविधाओं की कमी भी किसानों के लिए कठिनाई पैदा करती है। जो किसान बेहतर कीमत की प्रतीक्षा में अपनी उपज को सुरक्षित नहीं रख सकते, उन्हें अक्सर कटाई के तुरंत बाद फसल बेचनी पड़ती है। जल्दी खराब होने वाली फसलों में यह जोखिम और अधिक होता है। जलवायु परिवर्तन ने भी अनिश्चितता की एक और परत जोड़ दी है। बेमौसम बारिश, लू, सूखा, बाढ़, कीटों का प्रकोप और बदलते मौसम के पैटर्न फसलों को नुकसान पहुँचा सकते हैं या उत्पादन लागत बढ़ा सकते हैं। इसलिए अधिक उपज के बावजूद किसान को अधिक वित्तीय जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। समाधान केवल अधिक उत्पादन में नहीं है। कृषि को अधिक लाभदायक, टिकाऊ और लचीला बनाने की आवश्यकता है। भंडारण, परिवहन, प्रसंस्करण और विश्वसनीय बाजारों तक बेहतर पहुंच किसानों को अपनी उपज का अधिक मूल्य प्राप्त करने में मदद कर सकती है। फसल विविधीकरण से एक ही फसल पर निर्भरता कम की जा सकती है, जबकि कुशल सिंचाई और उर्वरकों के संतुलित उपयोग से लागत घटाने में मदद मिल सकती है। तकनीक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। मिट्टी की जांच,

सटीक कृषि, मौसम संबंधी जानकारी, आधुनिक सिंचाई प्रणालियाँ और डिजिटल बाजार मंच किसानों को बेहतर निर्णय लेने में सहायता कर सकते हैं। किसान उत्पादक संगठन और सहकारी संस्थाएँ सामूहिक रूप से कृषि सामग्री खरीदने और बड़ी मात्रा में उपज बेचने के माध्यम से किसानों की सौदेबाजी की क्षमता मजबूत कर सकती हैं। उपभोक्ताओं की भी इसमें भूमिका है। खाद्य प्रणाली किसान, व्यापारी, प्रसंस्करणकर्ता और उपभोक्ता को आपस में जोड़ती है। अधिक न्यायसंगत कृषि अधिक व्यवस्था के लिए पारदर्शिता आवश्यक है, ताकि इस पूरी श्रृंखला में पैदा होने वाला मूल्य उस व्यक्ति को आजीविका से अलग न हो जाए, जो वास्तव में भोजन पैदा करता है। अंततः कृषि की सफलता को केवल प्रति हेक्टेयर प्रॉडन उत्पादन से नहीं मापा जाना चाहिए। इसे किसान की शुद्ध आय, मिट्टी के स्वास्थ्य, पानी के कुशल उपयोग, बदलती परिस्थितियों से निपटने की क्षमता और खेती की आजीविका के रूप में गरिमा से भी मापा जाना चाहिए। किसान को अधिक उत्पादन और अधिक कमाई में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए। कृषि प्रगति का वास्तविक लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए—अधिक उत्पादक खेत, अनावश्यक लागत में कमी, उचित लाभ और अन्नदाता के लिए सुरक्षित भविष्य।

एक महान प्रधानाचार्य अपने आचरण से नेतृत्व करता है

डॉ. विजय गर्ग परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

विद्यालय केवल कक्षाओं, पाठ्य-पुस्तकों, परीक्षाओं और समय-सारिणियों से बनी एक इमारत नहीं होता। यह एक जीवंत संस्था है, जहाँ युवा मनो का निर्माण होता है, मूल्य विकसित होते हैं, संबंध बनते हैं और सपनों को दिशा मिलती है। इस शैक्षिक संस्था के केंद्र में प्रधानाचार्य खड़ा होता है—केवल प्रशासक के रूप में नहीं, बल्कि एक नेता, मार्गदर्शक, आदर्श और विद्यालय की संस्कृति के संरक्षक के रूप में। प्रधानाचार्य निर्देश जारी कर सकता है, नियम बना सकता है और जिम्मेदारियाँ बाँट सकता है, लेकिन सबसे गहरा प्रभाव एक और अधिक शक्तिशाली माध्यम से उत्पन्न होता है—व्यक्तिगत उदाहरण। शिक्षक और विद्यार्थी प्रधानाचार्य की बातें सुनते हैं, लेकिन वे इस बात को भी बहुत ध्यान से देखते हैं कि प्रधानाचार्य स्वयं क्या करता है। नेतृत्व तभी सार्थक बनता है जब नेता के शब्द और कर्म एक ही भाषा बोलें। इसलिए एक महान प्रधानाचार्य केवल दूसरों को यह नहीं बताता कि कैसे व्यवहार करना है; वह स्वयं वही व्यवहार करके दिखाता है, जिसकी अपेक्षा वह दूसरों से करता है।



है, तो उसे स्वयं भी समय का सम्मान करना चाहिए। यदि शिक्षकों से पाठों की तैयारी में गंभीरता की अपेक्षा की जाती है, तो प्रधानाचार्य को भी अपने प्रशासनिक कार्यों के प्रति उसी गंभीरता का प्रदर्शन करना चाहिए। यदि विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो प्रधानाचार्य स्वयं भी पुस्तक पढ़ता हुआ दिखाई दे। यदि स्वच्छता को महत्त्व दिया जाता है, तो प्रधानाचार्य को भी विद्यालय के वातावरण के प्रति जिम्मेदारी दिखानी चाहिए। ऐसे कार्य बिना किसी भाषण के अत्यंत प्रभावशाली संदेश देते हैं। अपने आचरण से किया गया नेतृत्व विश्वसनीयता पैदा करता है। जब लोग नेता के शब्दों और कर्मों में एकरूपता देखते हैं, तो विश्वास स्वाभाविक रूप से विकसित होता है।

समय की पाबंदी—बिना भाषण के एक पाठ

समय-प्रबंधन नेतृत्व का सबसे सरल, लेकिन सबसे स्पष्ट रूप है। जो प्रधानाचार्य समय पर विद्यालय पहुँचता है, बैठकों में समय की पाबंदी रखता है और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के समय का सम्मान करता है, वह यह संदेश देता है कि प्रत्येक व्यक्ति का समय महत्वपूर्ण है।

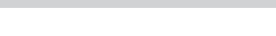
समय की पाबंदी केवल घड़ी से जुड़ी बात नहीं है। यह जिम्मेदारी, अनुशासन और दूसरों के प्रति सम्मान को दर्शाती है। यदि कोई प्रधानाचार्य स्वयं अक्सर देर से आए और दूसरों से समय की पाबंदी की अपेक्षा करें, तो उसकी हिदायत का नैतिक प्रभाव कमजोर हो जाता है। इसके विपरीत, जो प्रधानाचार्य लगातार समय का सम्मान करता है, वह



पूरे संस्थान में समय की पाबंदी की संस्कृति विकसित कर सकता है।

ईमानदारी विश्वास पैदा करती है

एक विद्यालय प्रमुख को प्रतिदिन शैक्षणिक, प्रशासनिक, वित्तीय और मानवीय पहलुओं से जुड़े अनेक निर्णय लेने पड़ते हैं। ऐसी परिस्थितियों में अधिकार से अधिक ईमानदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। एक महान प्रधानाचार्य सभी के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करता है, पारदर्शी प्रक्रियाओं का पालन करता है और पक्षपात से बचता है। निर्णय व्यक्तिगत पसंद-नापसंद के बजाय सिद्धांतों और संस्था के हितों पर आधारित होने चाहिए। ईमानदारी की वास्तविक परीक्षा तब होती है, जब कोई देखने वाला न हो। जब विद्यार्थी शिक्षा पूरी होने के साथ विद्यार्थी समाप्त हो गया, वह शिक्षकों और विद्यार्थियों को आजीवन सीखने के लिए प्रेरित करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। एक महान प्रधानाचार्य पढ़ता है, नई जानकारी प्राप्त करता है, व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेता है, नए विचारों की खोज करता है और बदलती दुनिया के प्रति जिज्ञासु बना रहता है। प्रधानाचार्य के लिए हर बात जानना आवश्यक नहीं है। वास्तव में, नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण रूप यह कहने की क्षमता है—“मुझे इस बारे में जानकारी नहीं है; आइए, हम साथ मिलकर सीखते हैं।” इससे ऐसा वातावरण बनता है जहाँ प्रश्न पूछना डर का कारण नहीं, बल्कि सीखने का माध्यम माना जाता है। शिक्षकों को केवल निर्देश नहीं, प्रोत्साहन भी चाहिए



एक प्रधानाचार्य अपने अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों से किस प्रकार बात करता है, यह उसके नेतृत्व के बारे में कई बार उच्च अधिकारियों से उसके व्यवहार से भी अधिक बताता है। जब संस्था का प्रमुख विद्यालय के प्रत्येक सदस्य के साथ सम्मान और गरिमा से व्यवहार करता है, तो आपसी सम्मान की संस्कृति धीरे-धीरे विकसित होती है।

प्रधानाचार्य स्वयं भी सीखने वाला हो

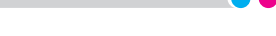
शिक्षा निरंतर बदल रही है। नई तकनीकें, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन प्रणालियाँ, सामाजिक चुनौतियाँ और वैज्ञानिक खोजें शिक्षकों और शैक्षिक नेताओं को लगातार सीखने के लिए प्रेरित करती हैं। जो प्रधानाचार्य यह मानता है कि औपचारिक शिक्षा पूरी होने के साथ सीखना भी समाप्त हो गया, वह शिक्षकों और विद्यार्थियों को आजीवन सीखने के लिए प्रेरित करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। एक महान प्रधानाचार्य पढ़ता है, नई जानकारी प्राप्त करता है, व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेता है, नए विचारों की खोज करता है और बदलती दुनिया के प्रति जिज्ञासु बना रहता है। प्रधानाचार्य के लिए हर बात जानना आवश्यक नहीं है। वास्तव में, नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण रूप यह कहने की क्षमता है—“मुझे इस बारे में जानकारी नहीं है; आइए, हम साथ मिलकर सीखते हैं।” इससे ऐसा वातावरण बनता है जहाँ प्रश्न पूछना डर का कारण नहीं, बल्कि सीखने का माध्यम माना जाता है। शिक्षकों को केवल निर्देश नहीं, प्रोत्साहन भी चाहिए



शिक्षक विद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण मानवीय संसाधन हैं। उनकी प्रेरणा सीधे तौर पर कक्षा के वातावरण और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। जो प्रधानाचार्य केवल गलतियों पर ध्यान देता है, वह चिंता का वातावरण पैदा कर सकता है। इसके विपरीत, जो प्रधानाचार्य मेहनत को पहचानता और रचनात्मक मार्गदर्शन देता है, वह आत्मविश्वास पैदा करता है। अपने आचरण से नेतृत्व करने का अर्थ है अच्छे कार्य की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करना और कमियों के बारे में निजी रूप से बात करना। शिक्षकों में नए प्रयोग करने, नवाचार लाने और अपने विचार साझा करने के अवसर देना भी इसका हिस्सा है। प्रधानाचार्य को हर चर्चा में स्वयं को सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसके बजाय ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहाँ शिक्षक महसूस करें कि उनका ज्ञान और अनुभव महत्वपूर्ण है।

विद्यार्थी बातों से अधिक व्यवहार देखते हैं

विद्यार्थी बहुत सूक्ष्म पर्यवेक्षक होते हैं। वे देखते हैं कि बड़े लोग एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, समस्याओं को कैसे हल किया जाता है और नियमों को कितनी समानता से लागू किया जाता है। यदि प्रधानाचार्य चाहता है कि विद्यार्थी ईमानदार हों, तो उसे स्वयं ईमानदारी दिखानी चाहिए। यदि वह चाहता है कि विद्यार्थी दयालु बनें, तो उसे स्वयं दया का व्यवहार करना चाहिए। यदि वह चाहता है कि विद्यार्थी विभिन्न विचारों का सम्मान करें, तो उसे स्वयं सम्मानपूर्ण संवाद का उदाहरण प्रस्तुत



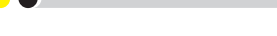
करना चाहिए। विद्यार्थी विद्यालय के वर्षों में सुनने वाले प्रेरणा भूल सकते हैं, लेकिन वे किसी प्रभावशाली शिक्षक या प्रधानाचार्य के व्यवहार को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

अनुशासन के साथ मानवता

स्वस्थ विद्यालयी वातावरण के लिए अनुशासन आवश्यक है, लेकिन समझ के बिना अनुशासन केवल दंडात्मक व्यवस्था बन सकता है। एक महान प्रधानाचार्य मानकों को बनाए रखते हुए यह भी समझता है कि विद्यार्थी विकासशील व्यक्ति हैं और उनसे कभी-कभी गलतियाँ हो सकती हैं। केवल यह पूछने के बजाय कि “दोषी कौन है?” एक संवेदनशील नेता यह भी पूछ सकता है—“क्या हुआ और हम इसे दोबारा होने से कैसे रोक सकते हैं?” इसका अर्थ गलत व्यवहार को नजरअंदाज करना नहीं है, बल्कि जवाबदेही के साथ संवेदनशीलता को जोड़ना है। विद्यार्थियों को यह सीखना चाहिए कि नियम केवल अधिकार दिखाने के लिए नहीं, बल्कि सुरक्षा, न्याय और जिम्मेदारी के लिए बनाए जाते हैं।

सुनना भी नेतृत्व है

नेतृत्व को अक्सर बोलने, निर्देश देने और निर्णय लेने से जोड़ा जाता है। लेकिन सबसे प्रभावशाली नेतृत्व कई बार ध्यानपूर्वक सुनने में होता है। जो प्रधानाचार्य शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों की बात सुनता है, वह समस्याओं को बड़ा संकट बनने से पहले समझ सकता है। खुले द्वार की नीति तभी सार्थक होती है जब लोग वास्तव में महसूस करें कि उनकी बात सुनी जा रही है। सुनने का अर्थ हर सुझाव को स्वीकार करना नहीं,



बल्कि प्रत्येक आवाज को विचार योग्य समझना है। कई बार शिक्षक को तुरंत समाधान नहीं चाहिए होता। उसे केवल किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उसकी बात ध्यानपूर्वक सुने।

गलतियों का सामना साहस से

कोई भी विद्यालय गलतियों से पूरी तरह मुक्त नहीं होता। प्रशासनिक त्रुटियाँ, गलतफहमियाँ, शैक्षणिक कठिनाइयाँ और मानवीय मतभेद कभी-कभी उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में प्रधानाचार्य की प्रतिक्रिया यह निर्धारित कर सकती है कि गलती सीखने का अवसर बनेगी या डर का कारण। जो नेता तुरंत दूसरों को दोषी ठहराता है, वह ऐसा वातावरण पैदा कर सकता है जहाँ लोग समस्याओं को छिपाने लगे। इसके विपरीत, जो नेता गलतियों का निष्पक्ष विश्लेषण करता है, वह लोगों को कठिनाइयों के बारे में ईमानदारी से बताने के लिए प्रोत्साहित करता है। अपने निर्णयों की जिम्मेदारी स्वीकार करना प्रधानाचार्य द्वारा स्थापित किए जाने वाले सबसे प्रभावशाली उदाहरणों में से एक है।

नवाचार की शुरुआत नेता से होती है

एक प्रातिशाली प्रधानाचार्य शिक्षकों को नई विधियाँ अपनाने और नए प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है। तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग, परियोजना-आधारित शिक्षा, पुस्तकालयों को सक्रिय शिक्षण केंद्र बनाना तथा विद्यार्थियों को शोध, प्रतियोगिताओं और सामाजिक गतिविधियों में शामिल करना विद्यालय को जीवंत बना सकता है।



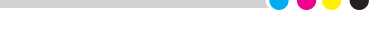
लेकिन नवाचार केवल परिपत्र जारी करने से नहीं आ सकता। प्रधानाचार्य को स्वयं परिवर्तन के प्रमुख लेखक का प्रदर्शन करना पड़ता है। यदि नेता नहीं तकनीक सीखने, नई शिक्षण विधियाँ अपनाने या पुरानी प्रथाओं पर पुनर्विचार करने के लिए तैयार नहीं है, तो दूसरों को नवाचार के लिए प्रेरित करना कठिन होगा।

सहयोग की संस्कृतिकानिर्माण

एक विद्यालय को एक व्यक्ति अकेले नहीं बदल सकता। स्थायी सुधार के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है। एक महान प्रधानाचार्य शिक्षकों को साथ लाता है, टीमवर्क को प्रोत्साहित करता है और विचार साझा करने के अवसर पैदा करता है। विभिन्न विभागों को अलग-अलग द्वीपों की तरह नहीं, बल्कि एक ही संस्था के हिस्सों के रूप में कार्य करना चाहिए। प्रधानाचार्य की भूमिका लोगों को जोड़ने की है। “यह मेरा विद्यालय है” कहने के बजाय एक प्रभावी नेता यह भावना पैदा करता है—“यह हमारा विद्यालय है और इसके विकास की जिम्मेदारी हम सबकी है।” भाषा में यह छोटा-सा परिवर्तन संस्थागत संस्कृति में बड़ा परिवर्तन ला सकता है।

मेहनत की पहचान आवश्यक है

हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी मेहनत को पहचाना जाए। शिक्षक अक्सर अपनी औपचारिक जिम्मेदारियों से आगे बढ़कर काम करते हैं—विद्यालय के बाद विद्यार्थियों की सहायता करना, गतिविधियाँ आयोजित करना, प्रतियोगिताओं की तैयारी करवाना और अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाले बच्चों का मार्गदर्शन करना।



आर्थिक मोर्चा - वैश्विक प्रतिबंध और भारत: ट्रंप ने लिंडसे ओ. ग्राहम रूस-ईरान प्रतिबंध अधिनियम 2026 पर किए हस्ताक्षर 100% टैरिफ की तलवार नहीं, पर अधिकार की मिसाइल; भारत के रुपया, शेयर बाजार, निर्यात और महंगाई पर क्या होगा असर ?



कानून 18-19 सितंबर को लागू, रूस के टॉप-5 तेल खरीदारों पर 100% तक शुल्क का अधिकार भारत पर आज से टैरिफ नहीं, पर ऊर्जा-सुरक्षा और व्यापार नीति की नई परीक्षा

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

19 सितंबर केवल एक और कारोबारी दिन नहीं 19 सितंबर 2026 का दिन वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए केवल एक और कारोबारी दिन नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 18 सितंबर (भारतीय समय 19 सितंबर रात) को Lindsey O. Graham Sanctioning Russia and Iran Act of 2026 (H.R. 5334) पर हस्ताक्षर कर इसे कानून बना दिया है। व्हाइट हाउस ने इसकी पुष्टि की है। यह कानून रूस के ऊर्जा, रक्षा उद्योग और उसके शैडो फ्लोट टैंकरों पर प्रतिबंध कड़ा करता है और ईरान प्रतिबंधों को 5 साल के लिए बढ़ाता है। सबसे महत्वपूर्ण भ्रम का निवारण: यह कानून भारत पर आज से 100% टैरिफ नहीं लगाता। यह राष्ट्रपति को अधिकार देता है कि वह रूस का कच्चा तेल/गैस खरीदने वाले 5 सबसे बड़े आयातकों पर 100% तक शुल्क लगा सके, साथ ही शर्तों के साथ छूट (Waiver) का अधिकार भी देता है।

मुख्य बिंदुवार - कानून क्या कहता है ? तथ्यों के साथ

बिंदु 1: कानून के मुख्य प्रावधान - नाम: लिंडसे ओ. ग्राहम अधिनियम - दिवंगत सीनेटर लिंडसे ग्राहम के सम्मान में, जिनका 11 जुलाई 2026 को निधन हुआ। - पास कैसे हुआ: सीनेट में 7 अगस्त को 86-11 वोट से, हाउस में 16 सितंबर को 262-159 वोट से पास। - रूस पर: रूसी अधिकारियों, बैंकों, ओलिगार्क्स, शैडो फ्लोट पर प्रतिबंध, रूस से आयात पर 500% तक शुल्क का प्रावधान। - भारत-चीन पर असर वाला क्लॉज: राष्ट्रपति को अधिकार कि वह रूस के तेल/गैस के टॉप-5 खरीदार देशों या प्रतिबंधों से बचने में मदद करने वाले देशों के सामान पर 100% तक लक्षित शुल्क लगा सके। चीन और भारत इसके प्राथमिक दायरे में हैं। जापान, फ्रांस जैसे कम आयात वाले देश छूट के दायरे में आ सकते हैं। - राष्ट्रपति को Waiver अधिकार: यदि देश रूसी गैस का 15% से कम आयात करता है और घटाने के कदम उठा रहा है, तो राष्ट्रीय हित में छूट दी जा सकती है।



सकती है। **बिंदु 2: भारत के सामने दोहरी चुनौती - निर्यात चमका, पर जोखिम बढ़ा** - अच्छी खबर: वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार अगस्त 2026 में भारत का वस्तु निर्यात 43.81 अरब डॉलर (पिछले साल 34.74 अरब डॉलर) - 26% से अधिक वृद्धि। कुल वस्तु+सेवा निर्यात 82.68 अरब डॉलर अनुमानित। अप्रैल-अगस्त में 215.91 अरब डॉलर। ईजीनियरिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स में मजबूती। - चुनौती: भारत दुनिया का तीसरा

सबसे बड़ा तेल आयातक है। रूस 2022 के बाद भारत का सबसे सस्ता कूड स्रोत बना। यदि वैकल्पिक महंगे स्रोत लेने पड़े तो आयात बिल बढ़ेगा। और यदि रूस से खरीद जारी रखी तो अमेरिकी बाजार में निर्यात पर शुल्क का दबाव बन सकता है। यहीं व्यापार नीति और ऊर्जा नीति टकराती हैं। **बिंदु 3: रुपया, शेयर बाजार और महंगाई - समग्र विश्लेषण** 1. रुपया: 19 सितंबर को रुपया 95.87 प्रति डॉलर पर बंद। RBI की डॉलर विक्री से सहारा, पर मजबूत डॉलर

और आयात मांग से दबाव। वित्त वर्ष में अब तक 1.05% कमजोर। यदि तेल महंगा होता है तो डॉलर मांग बढ़ेगी, रुपया 96 की ओर फिसल सकता है। 2. शेयर बाजार: 18 सितंबर को सेसेक्स 19.63 अंक गिरकर 74,294.96, निफ्टी 75.80 अंक बढ़कर 23,346.40 - मिश्रित बंद। व्यापक बाजार स्थिर, पर यह जोखिम खत्म होने का संकेत नहीं। कच्चा तेल, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, विदेशी निवेशक (FII) की चाल बाजार तय करेगी। ऊर्जा-खपत वाले सेक्टर - एविएशन, केमिकल, लॉजिस्टिक्स पर लागत दबाव आ सकता है। 3. महंगाई: तेल महंगा तो परिवहन, प्लास्टिक, उर्वरक, विनिर्माण की लागत बढ़ेगी। कमजोर रुपया आयातित महंगाई बढ़ाएगा। यदि तेल नरम रहा तो राहत मिलेगी। **बिंदु 4: भारत के लिए आगे की 5 निगरानी वाली बातें** 1. अमेरिकी प्रशासन Waiver का उपयोग कैसे करता है? 2. भारत रूस से आयात घटाता है या

विविधीकरण करता है? 3. कच्चा तेल \$80-90 के बैंड में टिकता है या नहीं? 4. रुपया 96 के मनोवैज्ञानिक स्तर पर RBI कैसे हस्तक्षेप करता है? 5. विदेशी निवेशकों का भारत में प्रवाह - क्या भारत को 'चाइना प्लस वन' का लाभ मिलता रहेगा? संपादकीय निष्कर्ष - तलवार चेतावनी है, कारवाई नहीं एडवोकेट भावनानी का मत सही है - यह कानून संभावित तलवार है, तत्काल वार नहीं। भारत के लिए यह रणनीतिक स्वायत्तता, ऊर्जा सुरक्षा और निर्यात हितों के बीच संतुलन की परीक्षा है। अवसर भी है - वैश्विक सप्लाई चेन विविधीकरण में भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, ईजीनियरिंग में हिस्सेदारी बढ़ा सकता है, जैसा अगस्त के आंकड़े दिखाते हैं। निवेशकों के लिए संदेश - एक दिन की तेजी-गिरावट पर नहीं, कंपनियों की आयात-निर्भरता, अमेरिकी बाजार में हिस्सेदारी और ऊर्जा लागत जैसे फंडामेंटल पर ध्यान दें।

भूमि पूजा के साथ शुरु हुई नव श्री केशव रामलीला कमेटी की तैयारी

तीन मंजिला भव्य स्टेज होगा लीला का मुख्य आकर्षण रिपोर्ट प्रेम सिंह परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक



दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, नजदीक बोट क्लब, सेक्टर 11 के सामने नव श्री केशव रामलीला कमेटी पंजी. द्वारा भूमि पूजा कर रामलीला की तैयारी शुरु कर दी। नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने कहा कि हर बार की तरह इस बार भी रामलीला का भव्य आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस बार रामलीला 11 अक्टूबर से शुरू होगी जो 20 अक्टूबर 2026 तक चलेगी, 10 दिन तक उत्सव का माहौल रहेगा। इस अवसर पर संस्था चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण ज़िंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सरोफ सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है। इस बार 120 फुट लंबा व तीन मंजिला भव्य स्टेज पर लीला का मंचन होगा। उन्होंने यह भी बताया कि रामलीला के दौरान सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से रोक रहेगी तथा ग्राउंड में पौधा रोपण कार्यक्रम

भी किया जाएगा। इस वर्ष की रामलीला कई मायनों में ऐतिहासिक, अद्भुत व भव्य होगी। देश की धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहरों को मंच पर जीवंत करने के साथ साथ भारतीय संस्कृति, संस्कार व परंपराओं का संगम मंच पर देखने को मिलेगा साथ ही इस रंगमंच के जरिए उनका प्रयास अति संवेदनशील छोटे बच्चों के मन में अपनी संस्कृति तथा मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। रामलीला के भव्य मंचन में रामायण के सभी पात्रों के संवादों को प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा। उन्होंने बताया की रामलीला मैदान में सैकड़ों गाडियों के पार्किंग की व्यवस्था की जाएगी। सैकड़ों लोगों के बैठने की व्यवस्था भी रहेगी, वहीं मेले का भी आयोजन जाएगा। रामलीला मैदान में जगह जगह एलईडी स्क्रील लगाई जाएगी, जिससे लोग रामलीला देख सके। नव श्री केशव रामलीला कमेटी के भूमि पूजन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कलाकारों की प्रस्तुति की सभी ने सराहना की। नव श्री केशव रामलीला कमेटी द्वारा डाडिया नाईट, मेला सहित कई अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसमें कई स्टॉल लगाए जाएंगे। मेले में हर प्रकार के झूले होंगे, जो कि बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहेंगे।

देवघर में श्याममय हुआ माहौल धूमधाम से मना 69वां श्री श्याम महोत्सव

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र देवघर

स्थानीय कास्टर टाउन स्थित श्री श्याम कीर्तन मंडल में 69वां श्री श्याम महोत्सव बड़े ही धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ भव्य और विराट रूप में मनाया गया। महोत्सव के दौरान पूरा क्षेत्र श्याम भक्ति में सराबोर नजर आया। हारे के सहारे बाबा श्री श्याम प्रभु का फूलों से आकर्षक, अलौकिक एवं मनमोहक श्रृंगार किया गया। पूरे मंदिर परिसर तथा आसपास के क्षेत्रों को भव्य पंडाल और रंग-बिरंगी आकर्षक लाइटों से सजाया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ विधिवत पूजा-अर्चना एवं ज्योत प्रज्वलित कर किया गया। इसके पश्चात बाबा के भक्तों एवं प्रसिद्ध भजन गायकों ने एक से बढ़कर एक भक्ति रस से ओत-प्रोत भजनों की अनुपम प्रस्तुति दी, जिस पर श्रद्धालु ध्रूम उठे और भक्ति की धारा में लीन हो गए। इस दौरान बाबा को छप्पन भोग अर्पित किया गया।

मुख्य बिंदु: 1. भारी भीड़: महोत्सव में महिला एवं पुरुष श्याम भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी। भक्त दर रात तक भजनों का आनंद लेते रहे। 2. भक्ति रस में सराबोर देवघर:



‘स्वच्छ हो गयाजी, स्वच्छ हो पितृपक्ष’ के संकल्प के साथ जुटा नगर निगम

अवकाश के दिन भी खुला निगम कार्यालय, मेघर-नगर आयुक्त ने जमादारों के साथ की सफाई व्यवस्था की समीक्षा

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक गयाजी

पितृपक्ष मेला में सफाई व्यवस्था को बेहतर रखने के लिए नगर निगम ने तैयारी तेज कर दी है। रविवार को अवकाश के बावजूद निगम कार्यालय खुला रहा। मेयर डॉ. वीरेंद्र

कुमार उर्फ गणेश पासवान, सशक्त स्थायी समिति के सदस्य अखीरी ओंकारनाथ उर्फ मोहन श्रीवास्तव और नगर आयुक्त डॉ. गगन कुमार ने सभी सफाई जमादारों के साथ बैठक कर मेला क्षेत्र की सफाई व्यवस्था की समीक्षा की। मेयर ने जमादारों को आपसी समन्वय के साथ काम करने और सफाई को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि पितृपक्ष में देश-विदेश से लाखों तीर्थयात्री गयाजी पहुंचते हैं। ऐसे में स्वच्छता नगर निगम की बड़ी जिम्मेदारी है। बैठक में सभी ने हाथ उठाकर “स्वच्छ हो

गयाजी, स्वच्छ हो पितृपक्ष” का संकल्प लिया। नगर आयुक्त ने कहा कि मेला के दौरान सफाई में किसी तरह की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। जमादार अपने-अपने क्षेत्रों में लगातार निगरानी रखें और गंदगी जमा नहीं होने दें। मोहन श्रीवास्तव ने कहा कि पितृपक्ष मेला गयाजी की पहचान से जुड़ा महत्वपूर्ण आयोजन है। श्रद्धालुओं के बीच स्वच्छता का अच्छा संदेश जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल नगर निगम की नहीं, बल्कि सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।



प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) और लक्षित कल्याण वितरण: आदित्य शर्मा

प्रस्तुतकर्ता:- पिंकी कुंडू सह-संपादक परिवहन विशेष

भारत में सरकारी सहायता और कल्याणकारी योजनाओं की कहानी लंबे समय तक एक ऐसी व्यवस्था की रही, जिसमें दिल्ली से किया गया वादा लाभार्थी तक पहुँचते-पहुँचते कई स्तरों से होकर गुजरता था। इस लंबी प्रक्रिया में फर्जी नाम, बिचौलियों की भूमिका, भुगतान में देरी और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ अक्सर सामने आती थीं। किसान, विद्यार्थी, विधवा या जरूरतमंद परिवार के लिए जिस सहायता की समय पर आवश्यकता होती थी, वह कई बार निर्धारित समय पर नहीं पहुँच पाती थी। पिछले एक दशक में इस व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण बदलावों में से एक प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer-DBT) का विस्तार रहा है। इसका उद्देश्य सरल है—लाभार्थी की सही पहचान करना और सरकारी सहायता सीधे उसके बैंक खाते में पहुँचाना। इसके लिए भारत ने बड़े पैमाने पर डिजिटल और वित्तीय बुनियादी ढाँचा विकसित किया, जिसे अक्सर JAM

Trinity—जन धन, आधार और मोबाइल के रूप में जाना जाता है। जन धन योजना के माध्यम से लोगों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ना, आधार के माध्यम से विशिष्ट पहचान उपलब्ध कराना और मोबाइल के माध्यम से वित्तीय लेन-देन की जानकारी लोगों तक पहुँचाना—इन तीनों ने मिलकर कल्याणकारी योजनाओं के वितरण को अधिक प्रत्यक्ष बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक लाभार्थी की बदलती कहानी ओडिशा के एक गाँव में रहने वाली सुनीता जैसी विधवा की कल्पना कीजिए। कुछ वर्षों पहले तक उसे हर महीने मिलने वाली सरकारी सहायता के लिए सरकारी कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे। कई बार उसे किसी मध्यस्थ की मदद लेनी पड़ती थी और भुगतान में देरी भी होती थी। अब, यदि उसकी योजना DBT से जुड़ी है, तो निर्धारित राशि सीधे उसके बैंक खाते में जमा हो सकती है। उसके मोबाइल पर भुगतान की सूचना आती है और वह नजदीकी बैंकिंग कनेक्स्पॉन्डेंट या माइक्रो-एटीएम के माध्यम से अपनी राशि प्राप्त कर सकती है। इस प्रक्रिया में सरकारी कार्यालय के चक्कर और अनावश्यक



मध्यस्थता की आवश्यकता कम होती है। यही DBT की वास्तविक शक्ति है—लाभार्थी और सरकारी सहायता के बीच की दूरी को कम करना। PAHAL और LPG सब्सिडी का उदाहरण DBT के प्रभाव को समझने के लिए LPG सब्सिडी योजना PAHAL एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। पहले सब्सिडी वाले सिलेंडर की व्यवस्था में आपूर्ति और सब्सिडी के बीच कई स्तर मौजूद थे। DBT मॉडल में उपभोक्ता सिलेंडर की कीमत का भुगतान करता है और पात्र सब्सिडी राशि सीधे उसके बैंक खाते में

स्थानांतरित की जाती है। इससे सब्सिडी के वितरण को अधिक पारदर्शी बनाने और फर्जी या दोहराए गए लाभार्थियों को हटाने में मदद मिली। सरकार के लिए भी इससे संसाधनों की बेहतर निगरानी और बचत की संभावनाएँ बढ़ीं। केवल नई योजनाएँ नहीं, पुरानी व्यवस्था को बेहतर बनाना DBT की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसका उद्देश्य केवल नई कल्याणकारी योजनाएँ बनाना नहीं है, बल्कि मौजूदा योजनाओं के लाभ को अधिक प्रभावी ढंग से नागरिकों तक पहुँचाना भी है। PM-KISAN जैसे कार्यक्रमों में पात्र किसानों को वित्तीय सहायता सीधे बैंक खाते में प्राप्त होती है। इसी प्रकार छात्रवृत्ति योजनाओं में DBT का उपयोग विद्यार्थियों को सहायता सीधे उपलब्ध कराने के लिए किया जाता है। इससे भुगतान की प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ती है और लाभार्थी को यह पता चल सकता है कि राशि कब और कितनी प्राप्त हुई। हालाँकि, DBT पूरी तरह चुनौतियों से मुक्त नहीं है। आधार प्रमाणिकरण में समस्या, बैंकिंग सुविधाओं की सीमित पहुँच, डिजिटल साक्षरता,

डेटा सुरक्षा और संभावित बहिष्करण जैसे मुद्दे महत्वपूर्ण हैं। इसलिए DBT की सफलता केवल डिजिटल तकनीक पर निर्भर नहीं करती; इसके साथ मजबूत शिकायत निवारण व्यवस्था, मानवीय सहायता और अंतिम व्यक्ति तक बैंकिंग सुविधा की उपलब्धता भी आवश्यक है। फिर भी, DBT ने भारत के कल्याणकारी प्रशासन में एक महत्वपूर्ण बदलाव प्रस्तुत किया है। इसने सरकारी सहायता को बिचौलियों पर निर्भर व्यवस्था से निकालकर सीधे लाभार्थी के बैंक खाते तक पहुँचाने की दिशा में कदम बढ़ाया है। अंततः DBT केवल पैसे के हस्तांतरण की तकनीकी व्यवस्था नहीं है। इसका व्यापक अर्थ पारदर्शिता, वित्तीय समावेशन और लाभार्थी की गरिमा से जुड़ा है। किसी लाभार्थी के मोबाइल पर आने वाला एक संदेश—कि सरकारी सहायता उसके खाते में जमा हो गई है—इस बदलाव का सबसे सरल प्रतीक है। जब सरकार का लाभ सही व्यक्ति तक, सही समय पर और सही राशि में पहुँचता है, तो कल्याणकारी नीति केवल कागज पर दर्ज वादा नहीं रहती; वह नागरिक के जीवन में वास्तविक सहायता बन जाती है।

जनकपुरी के फाइव स्टार होटल में प्रलोभन देकर ईसाई धर्मांतरण व विरोध करने वाले हिन्दू कार्यकर्ताओं पर जानलेवा हमले पर भड़की विहिप; प्रान्त मंत्री सुनील सूरि ने की सख्त कार्रवाई व निष्पक्ष जांच की मांग

प्रस्तुतकर्ता:- पिंकी कुंडू सह-संपादक परिवहन विशेष पौरवमी दिल्ली के जनकपुरी स्थित प्रतिष्ठित फाइव स्टार होटल में प्रलोभन देकर बड़ी संख्या में लोगों के धर्म परिवर्तन कराए जाने और इसका विरोध व दस्तावेजीकरण करवा जाने वाले नागरिकों पर जानलेवा हमला किए जाने का श्रयंत गंभीर मामला सामने आया है। इस संबंध में जनकपुरी थाने में औपचारिक शिकायत (डायरी नं. 94-A) दर्ज करवाई गई है। विध्व हिंदू परिषद (विहिप) दंडमय प्रांत के प्रान्त मंत्री श्री सुनील सूरि ने इस घटना पर कड़ा रेष व्यव्ता करते हुए पुलिस व प्रशासन से त्वरित प्राथमिकी (फािर) दर्ज कर कठोरतम कानूनी कार्रवाई की मांग

की है। घटना का विवरण: शिकायत के अनुसार, आज २० सितंबर २०१६ को जनकपुरी स्थित होटल रोला में आयोजित एक रसम में करीब 15० से २०० लोग (जिनमें महिलाएं, पुरुष और बच्चे शामिल थे) एकत्रित थे। वहाँ मौजूद पर्यवेक्षकों ने देखा कि एक संगठित कंसाई तंत्र द्वारा विभिन्न प्रलोभन देकर ईसाई धर्म में परिवर्तन कराने की संदिग्ध गतिविधियाँ संचालित की जा रही थीं। जिन हिन्दू नागरिकों ने इस पर आपत्ति जताई और दस्तुस्थिति की वीडियो रिकॉडिंग शुरू की, तो कार्यक्रम के आयोजकों व व्यवस्थापकों ने गैरूड को मझाकर हुए जमाना हमला करवा दिया। विरोध

करने वाले व्यक्तियों के साथ गंभीर मारपीट, धक्का-मुक्की की गई और उन्हें जान से माने की धमकियाँ दी गईं। शिकायतकर्ताओं के अनुसार, हमलावरों ने कहा "तुम्हें सुन्नर की तरह काट देंगे। हमारी ताकतों करती तह फैली हुई है तुम्हें अंदाजा नहीं है। हम तुम्हें जान से मार भी देंगे और कहीं कुछ बिगाड़ नहीं पायेगा।" शिकायतकर्ताओं ने किसी तरह मौके से भागकर अपनी जान बचाई और घटना के वीडियो, फोटो साथै पुलिस को सौंपते हुए कानूनी कार्रवाई की मांग की है शिकायतकर्ता की सूचना पर मौके पर बजरंगदत्त, विहिप के कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया और कार्रवाई की मांग की।

विहिप प्रान्त मंत्री श्री सुनील सूरि का वक्तव्य: घटना की कड़ी निंदा करते हुए विहिप दिल्ली प्रान्त के मंत्री श्री सुनील सूरि ने कहा: "देश की राखवाजी दिल्ली में इस प्रकार फाइव स्टार होटलों के बंद कमरों में गरीबों और प्रसन्नय लोगों को प्रलोभन देकर धर्मांतरण का कूटसत खेल चलाया जा रहा है। जब सज़न नागरिकों ने इस गैरकानूनी गतिविधि का शांतिपूर्ण विरोध किया और साथै जुटने का प्रयास किया, तो उन पर हिंसक हमला कर दिया गया। दिल्ली में इस प्रकार की अराजकता और अश्रद्धा धर्मांतरण को किसी भी सूत्र में बढ़ोत्तरी नहीं किया जाएगा। बजरंगदत्त और विहिप दिल्ली वासियों को विरसत दिताती है कि ऐसे कुकृत्य से समाज को

बचाने के लिए विहिप सतत प्रयत्नशील रहेगा साथ ही प्रशासन से भी प्रभाव है कि जल्द से जल्द समुचित कार्रवाई से अश्व्या बजरंगदत्त विरोध प्रदर्शन के लिए मजबूर होगा।" **निष्कर्ष का प्रमुख नुां:** 1. तत्काल F.I.R एवं गिरफ्तारी: गान्गले में भारतीय व्याप संस्था, २०१३ की संबंथित धाराओं—115(२) (स्वेच्छा से वोट पहुँचाना), 1३1 (लूता/आपराधिक बात), 3५1(३) (जान से मारने की धमकी देकर आपराधिक धमकी), तथा 1८9, 19०, 191 (विधि विरुद्ध ज़माव व दंगा) व अन्य लागू कानूनी प्रावधानों के तहत अतिबलं F.I.R दर्ज कर हमलावरों और मुख्य आयोजकों को तुरंत गिरफ्तार किया जाए।

२. होटल प्रबंधन व फंडिंग की जांच: होटल प्रबंधन द्वारा इस आयोजन के लिए किए गए लेन प्रान्दलन, बुकिंग रजिस्टर, भुगतान विवरण तथा कार्यक्रम के वित्तीय स्रोतों (कंटेन) की गहन और पारदर्शी जांच से। ३. सुरक्षा व निष्पक्ष जांच: शिकायतकर्ताओं और प्रत्यक्षदर्शीों को पूरी सुरक्षा प्रदान की जाए तथा पूरे श्र्दयंत्र के पीछे स्थित मुख्य सूत्रधारों को बेनकाब किया जाए। विहिप ने सख्त चेतावनी दी है कि यदि पुलिस प्रशासन ने गान्गले में डितार्ड बरती वा दोषियों के रिताफ ल्वरित व सख्त कार्रवाई नहीं की, तो संगठन लोकतांत्रिक तरीके से व्यापक जन-आंदोलन करने के लिए बाध्य होगा।



पाप का घड़ा भर गया - DTC को निजीकरण से बचाने का समय आ गया है

862 रुपये में गुजारा नहीं, चालकों की हड़ताल सिर्फ वेतन की लड़ाई नहीं, बल्कि दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को बचाने की लड़ाई है

लेख: राज सिंह वर्मा, महासचिव - DTC पेंशनर संगठन

प्रस्तुतकर्ता हंसराज परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

संपादकीय टिप्पणी: जब-जब अन्याय और शोषण चरम पर पहुँचता है, तब-तब आम जनमानस खुद न्याय के लिए खड़ा होता है। दिल्ली में पिछले पाँच दिनों से जारी DTC क्लस्टर बस चालकों की हड़ताल इसी सत्य को प्रमाणित कर रही है। दिल्ली सरकार द्वारा DTC को धीरे-धीरे विभिन्न निजी कंपनियों के हवाले कर समाप्त करने की जो अंदरूनी साजिश चल रही थी, आज उसका पर्दाफाश हो गया है।

यह हड़ताल महज वेतन वृद्धि की मांग नहीं है, यह दिल्ली की जीवन रेखा कही जाने वाली DTC के अस्तित्व की लड़ाई है।



1. मांग एक हो - समान काम समान वेतन: सभी चालक भाई अपनी मांग एक

ही रखें - समान काम का समान वेतन। अलग-अलग मांगों से आंदोलन कमजोर

होगा। यही मांग DTC के कॉन्ट्रैक्ट स्टाफ के लिए भी उठाई जा रही है।

DTC में भूचाल: तेखंड डिपो के 52 चालकों का सामूहिक इस्तीफा, हड़ताल पर अड़े - बोले, 862 रुपये में परिवार कैसे पलेगा ? ऐसी नौकरी क्यों करनी ?

DC कर्मचारी एकता यूनियन का बड़ा आरोप - सरकार प्रशासन दबाव बना रहा, चालक बोले मांगें नहीं मानी तो आंदोलन जारी रहेगा, मेट्रो में भीड़ बढ़ी, चांदनी चौक-चावड़ी बाजार का बाजार नरम

रिपोर्ट हंसराज परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

दिल्ली की लाइफलाइन पर संकट गहराया दिल्ली परिवहन निगम (DTC) के तेखंड डिपो में तैनात 52 चालकों ने सामूहिक इस्तीफा सौंप दिया है। यह जानकारी DC कर्मचारी एकता यूनियन ने दी है। चालक पिछले कई दिनों से हड़ताल पर हैं और अब इस्तीफा देकर उन्होंने अपना विरोध और तेज कर दिया है।

यूनियन का कहना है - "ऐसी नौकरी क्यों करनी जिसमें परिवार का पालन-पोषण ही ठीक ढंग से न हो सके।"

मामला बिंदुवार - ग्राउंड जीरो से रिपोर्ट

बिंदु 1: इस्तीफे की वजह - 862 रुपये का सवाल

दैनिक मजदूरों की संख्या घटी है। मार्केट का माहौल नरम दिखाई दिया।

- आसपास की दुकानों में काम करने वाले कामगारों का कहना है - "हमें मेट्रो में प्रतिदिन चलने के हिसाब से तैयारी नहीं मिलती, न चाहते हुए भी ज्यादा किराया देकर सफर करना पड़ रहा है।"

बिंदु 3: सबसे ज्यादा मार - सोनिया विहार, चौहान पट्टी के मजदूरों पर

- सोनिया विहार, चौहान पट्टी, पुरानी दिल्ली, चावड़ी बाजार जैसे इलाकों में रोज की मजदूरी कर गुजर-बसर करने वाले लोग सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।

- ये सभी बस में यात्रा करने वाले नियमित यात्री हैं।

- लोगों में गुस्सा - एक यात्री ने कहा, "वो हमें बताते थे कि 862 रुपये में गुजारा कैसे कर सकते हैं, हमें मजाक लगता था, आज पता लगा। दिल्ली की जनता अब जान चुकी है।"

- लोगों का आरोप - "भारतीय जनता पार्टी ने कितना गंदा खेल रखा है" - कम वेतन पर संविदा चालकों से काम लेना।

बिंदु 4: यूनियन vs सरकार - टकराव बढ़ा

- यूनियन का पक्ष: यह शोषण है। संविदा (कॉन्ट्रैक्ट) चालकों को न तो स्थायी किया जा रहा है, न ही सम्मानजनक वेतन दिया जा रहा है।

- सरकार का पक्ष (अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं): प्रशासन पर दबाव बनाने का आरोप है।

संपादकीय विश्लेषण - यह सिर्फ 52 चालकों का इस्तीफा नहीं है यह दिल्ली की परिवहन नीति की पोल है। एक तरफ दिल्ली सरकार इलेक्ट्रिक बसें लाने का दावा करती है, दूसरी तरफ उसी बस को चलाने वाले चालक 862 रुपये में परिवार न पाल पाने की वजह से इस्तीफा दे रहे हैं।

तेखंड डिपो का यह मामला एक डिपो का नहीं है। DTC में 3,500 से ज्यादा संविदा चालक-परिचालक हैं। अगर 52 ने हिम्मत दिखाई है तो बाकी में भी यही आक्रोश है।

और सबसे बड़ा सवाल: जब DTC बसें नहीं चलेगी, तो सोनिया विहार का

हौसला और एकता से ही जीत मिलती है।

निष्कर्ष - सरकार के लिए चेतावनी: यह हड़ताल सरकार की आंखों पर चढ़ी निजीकरण की पट्टी उतारने के लिए काफी है। सरकार को रेंड लाइन बसों का दौरा बदलना चाहिए, जब निजीकरण फेल होने पर फिर से DTC की बसें लानी पड़ेंगी थीं।

जनहित में सरकार को चाहिए कि इन सभी क्लस्टर बसों को DTC के अधीन ले और सभी चालकों और संचालकों को DTC में नियमित भर्ती करे। तभी DTC अपने पुराने गौरव में लौट सकेगी और दिल्ली की जनता को समुचित, सुरक्षित और सस्ती बस सेवा मिल सकेगी।

मैं 21000 पेंशनरों के संगठन को पिछले 12 वर्षों से चला रहा हूँ, इस अनुभव के आधार पर कहता हूँ - संयम और एकता बनाए रखो, कोई अप्रिय घटना न होने दो, आपकी जीत निश्चित है। इस संघर्ष में सलाह या किसी पत्राचार की आवश्यकता हो तो मैं 24 घंटे आपके साथ हूँ।

झारखंड में बनेगा विश्व-स्तरीय आयुर्वेदिक अस्पताल : इरफान अंसारी (मंत्री)



आयुष कालेज के लिये 900 करोड़ का डीपीआर केंद्र को झारखंड ने भेजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, राजधानी रांची के पलाश भवन में रविवार को रप्रदेश आयुर्वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राज्य के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी शामिल हुए. इस दौरान स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि उनका ध्यान राज्य में एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति के विकास के साथ-साथ आयुर्वेद चिकित्सा व्यवस्था को भी विश्व स्तर का बनाने की ओर है.

उन्होंने कहा कि राज्य में एक विश्व स्तरीय आयुष मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल हो इस परिकल्पना को पूरा करने के दिशा में स्वास्थ्य विभाग आगे बढ़ रहा है. उन्होंने कहा कि इसके लिए उन्होंने 900 करोड़ की लागत से बनने वाली आयुष मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल से जुड़ी पूरी परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) केंद्र सरकार को सौंप दी है.

स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने कहा कि जब देश में आयुष की बात होती है तो सबका ध्यान केरल राज्य पर चला जाता है, लेकिन वहां जो इलाज है वह सस्ता नहीं है और न ही आम लोगों की पहुंच में है. अगर झारखंड में आयुष पर ध्यान केंद्रित किया जाए तो यह केरल का विकल्प के रूप में उभर सकता है.

पुरुलिया करम महोत्सव में झारखंड, ओडिशा, बंगाल के लाखों कुंडमियों की समागम

ममता सरकार द्वारा एसटी दर्जा केस वापस लिये जायेंगे, कुंडमाली को मिलेगा आठवीं अनुसूची में दर्जा: सुवेन्दु अधिकारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, झारखंड के सरायकेला जिला सीमा से सटा पुरुलिया में आज करम महोत्सव मनाया गया। जहां तीनों राज्यों (झारखंड, ओडिशा, बंगाल) से भारी संख्या में कुंडमी लोग शामिल रहे। बंगाल सरकार 2025 में कुंडमी समाज के आंदोलन के दौरान दर्ज किए गए सभी मामलों को वापस लेगी। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने रविवार को पुरुलिया के

कड़ाडी मैदान में आयोजित कुंडमी समाज के करम पर्व महोत्सव में यह घोषणा की। जहां बंगाल, झारखंड, ओडिशा के विभिन्न इलाकों से आये लाखों लोग एवं कुंडमी नेता, बुद्धिजीवी शामिल थे।

समारोह में जुटी हजारों लोगों की भारी भीड़ को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली तृणमूल कांग्रेस सरकार के दौरान आंदोलन को लेकर कुंडमी समुदाय के सदस्यों पर दर्ज मामले वापस लिए जाएंगे। कुंडमी समाज ने सितंबर 2025 में अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा देने सहित विभिन्न मांगों को लेकर आंदोलन किया था। इस दौरान



राज्य के विभिन्न हिस्सों में विरोध-प्रदर्शन हुए थे और कई मामले दर्ज किए गए थे। शुभेंदु ने आरोप लगाया कि पिछली तृणमूल कांग्रेस सरकार ने कुंडमी समाज

के भीतर विभाजन पैदा किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार कुंडमी समाज के विकास के लिए किए गए वादों को पूरा करेगी। उन्होंने बताया

कि चालू वित्त वर्ष के बजट में कुंडमी समाज के विकास के लिए 50 करोड़ रुपये का प्रविधान किया गया है और आने वाले दिनों में राशि बढ़ाई जाएगी।

बांगोपसागर की खाड़ी में गहरा रहा निम्न दबाव, 22 से ओडिशा में बारिश का कहर!

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: बांगोपसागर की खाड़ी में एक बार फिर चक्रवात का खतरा दिखाई दे रहा है। आगामी सप्ताह में वर्ष 2026 का पहला समुद्री तूफान बन सकता है, जिसका नाम 'अर्णव' होगा। बंगाल की खाड़ी में बना निम्न दबाव का खतरा अब धीरे-धीरे मजबूत हो रहा है। मौसम विभाग के अनुसार के अनुसार, यह पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा में आगे बढ़ते हुए 21 सितंबर को अवदाब (Depression) और 22 सितंबर तक गहरे अवदाब (Deep Depression) में बदल सकता है। 23 सितंबर की सुबह तक इसके दक्षिणी ओडिशा-उत्तरी आंध्र प्रदेश तट के पास पहुंचने की संभावना है। हालांकि, यह निम्न दबाव का क्षेत्र चक्रवात का रूप लेगा या नहीं, यह अभी स्पष्ट नहीं है। लेकिन इसके प्रभाव से ओडिशा में 22 से 26 सितंबर के बीच भारी से बहुत भारी बारिश हो सकती है। इसे देखते हुए मौसम विभाग ने विभिन्न जिलों के लिए रेड, ऑरेंज और येलो चेतावनी जारी की है। 22 सितंबर: गजपति, गंजा और पुरी जिलों के कुछ स्थानों पर अत्यंत भारी बारिश की आशंका को देखते हुए रेड चेतावनी जारी की गई है। इसके



अलावा बालेश्वर, भद्रक, जाजपुर, केंद्रापड़ा, जगतसिंहपुर, कटक, ब्योझर, मयूरभंज, कालाहांडी, कंधमाल, नबरंगपुर, रायगढ़ा, कोरापुट, मालकानगिरी, खुर्दा और नयागढ़ जिलों में भारी बारिश के लिए येलो चेतावनी जारी की गई है। 23 सितंबर: बारिश का प्रकोप और बढ़ सकता है। कंधमाल, गजपति, गंजा और पुरी जिलों के कुछ स्थानों पर अत्यंत भारी से असाधारण मध्य और को समुद्र में न जाने की सलाह दी है। क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र की निदेशक मनोरमा महांती ने निम्न दबाव के संभावित मार्ग और बारिश को लेकर जानकारी दी है।

कोरापुट, मालकानगिरी और खुर्दा जिलों के लिए ऑरेंज चेतावनी जारी की गई है। बालेश्वर, भद्रक, जाजपुर, केंद्रापड़ा, अनुगुल, ढेंकानाल, ब्योझर, मयूरभंज, सुबरनपुर, नुआपड़ा और बलांगीर जिलों में भारी बारिश के लिए येलो चेतावनी जारी की गई है। निम्न दबाव के प्रभाव को देखते हुए मौसम विभाग ने 22 से 24 सितंबर तक मध्य और को समुद्र में न जाने की सलाह दी है। क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र की निदेशक मनोरमा महांती ने निम्न दबाव के संभावित मार्ग और बारिश को लेकर जानकारी दी है।

पेयजल की गुणवत्ता निगरानी और स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत किया पूर्व तट रेलवे ने

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों के लिए सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पूर्व तट रेलवे ने रेलवे स्टेशनों और रेलवे कॉलोनिजों में पेयजल की गुणवत्ता एवं स्वच्छता निगरानी व्यवस्था को और अधिक सख्त किया है। 18 अगस्त से 3 सितंबर 2026 तक चलाए गए विशेष 15 दिवसीय अभियान के बाद भी लगातार पानी की गुणवत्ता की जांच की जा रही है। इस अवधि के दौरान पूर्व तट रेलवे के 175 रेलवे स्टेशनों और 160 रेलवे कॉलोनिजों में व्यापक जल गुणवत्ता परीक्षण किया गया। कुल 1,037 रैजिडुअल क्लोरीन परीक्षण और 288 बैक्टीरियोलॉजिकल (जीवाणु संबंधी) परीक्षण किए गए। यह अभियान पूर्व तट रेलवे के खुर्दा रोड, संबलपुर और रायगढ़ा—तीनों मंडलों में चलाया गया। जांच के दौरान प्रारंभिक रूप से सात बैक्टीरियोलॉजिकल नमूने निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं पाए गए। इसे गंभीरता से लेते हुए तत्काल सुधारात्मक कदम उठाए गए और दोबारा परीक्षण किया गया। बाद में सभी सात नमूने निर्धारित मानकों एवं नियमों के अनुरूप पाए गए। पूर्व तट रेलवे नियमित अंतराल पर तथा अचानक (सर्प्राइज) जल परीक्षण के साथ पानी की टैंकों, वाटर कूलरों और स्टेशन सुविधाओं की नियमित सफाई भी जारी रखे हुए है। इसके अलावा, नियमित निगरानी के तहत स्टेशन परिसर, प्रतीक्षालय, शौचालय और नालियों को सफाई के लिए दैनिक स्वच्छता अभियान भी चलाया जा रहा है।

